

HINDI BENGALI SHIKSHA.

(Second Part)

By

PANDIT HARIDASS,

AN EXPERIENCED TEACHER,

Formerly Head Master T. A. v. School, Pokaran (JODHPUR)

AND AUTHOR OF

Swasthya Raksha, Angrezi Shiksha Series, Aqlamandi-ka-

Khazana, Kalgyan & Translator of Gulistan,

Bhagavada Gita, Rajsingh or

Chanchal Kumari etc.

SECOND EDITION.

1916.

Printed by BABU RAMPRATAP BHARGAVA,

at the "Narsingh Press"

201, Harrison Road,

CALCUTTA.

दूसरी बार १०००]

[मूल्य ॥

NOTICE.

*Registered under Section XVIII of act
XXV of 1867.*

All rights reserved.

आवश्यक सूचना ।

इस किताबकी रजिस्ट्री सन् १८६७ के ऐक्ट २५ सैक्शन १८ के मुताबिक सरकारमें हो गई है। कोई शख्स इसके फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पुलटकर काम निकालनेका अधिकारी नहीं है। यदि, कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो राज-दण्डसे दण्डित होगा।

हमारा वक्तव्य ।

जिस जगदाधारकी असीम कृपासे संसारके सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं ; उसी जगन्नायककी विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्या-व्यसनी ग्राहकोंकी अशेष कृपाका यह फल है कि आज हम "हिन्दी-बँगला शिक्षा" का यह दूसरा भाग लेकर सर्वसाधारणके सम्मुख उपस्थित हो सके हैं । इसके प्रथम भागकी हिन्दी-सेवियोंने जैसी कदर की, उसीसे मालूम होता है कि हमारी थोड़ी सी तुच्छ सेवानी कुछ विशेष फल दिखाया है और यही एक प्रधान कारण है कि हमारे हृदय में वसन्तागमनके समान यह दूसरा भाग भी लिखकर ग्राहकोंकी सेवामें अर्पण करनेका विशेष उत्साह और अवसर प्राप्त हुआ ।

यद्यपि हमारी "बँगला-शिक्षा" के प्रथम भागने बँगला सीखनेमें बहुत कुछ सहायता प्रदान की है ; यद्यपि अधिकांश नाम, शब्द, वाक्य और सुहावनोंका उसीसे पता मिल जाता है ; यद्यपि बँगला सरीखे अथाह रत्नभाण्डारका आनन्द उपभोग करनेकी शक्ति उसी प्रथम भागसे ही आ जाती है ; तथापि व्याकरणसे अमूल्य विषयका, जो भाषाको शुद्ध करनेका एक मात्रही अस्त्र है, भीषण अभाव रह जाता है । बिना व्याकरण जाने किसी भाषाको पढ़ लेनेकी शक्ति

आजाने पर भी उसी भाषाको शुद्ध बोलने, लिखने और उस भाषाका पण्डित होनेमें एक बड़ा ही विषम घाटा रह जाता है ; जिससे मनुष्य न उस भाषाका लेखक ही हो सकता है और न वक्ता ही। यही एक प्रधान त्रुटि दूर करनेके लिये, ग्राहकोंसे उपरोक्त अथाह उत्साह मिलता हुआ देखकर, मुझे इस 'हिन्दी बँगला शिक्षा का' यह दूसरा भाग भी लिखना ही पड़ा।

इस भागमें व्याकरणका आरम्भ करके जो कुछ विषय बँगला सीखने वालोंके लिये उपयोगी दिखाने दिये, लगभग सभी लिख दिये गये हैं। व्याकरणसे कड़े चनेकी समझाकर मुलायम कर देनेका बहुत कुछ उद्योग भी कर दिया गया है और साथ ही बँगलाके वे घराज शब्द जो प्रचलित भाषा में कम आते हैं इसलिये अधिक करके दे दिये गये हैं, जिससे बोलचालमें, वक्तृता देते समय अथवा लेख लिखते समय भ्रष्टापन न आ जाय। यह भाग कैसा हुआ, इस अपनी मनो-मिलाषा पूरी कर सकें या नहीं, अथवा इससे कुछ लाभ होगा या नहीं, यह सरलहृदय समालोचक और साहित्यसेवी तथा बँगला सीखनेवाले हमारे ग्राहकगण ही जानें।

प्रेमी ग्राहकगण और सदारहृदय समालोचकोंके लिये एक बात और भी कहनी है :—लोभ मनमें आते ही मनुष्य भले बुरेका ज्ञान छोड़, असत्पथपर चलनेके लिये तय्यार हो जाते हैं। ठीक यही दशा 'अंगरेजी हिन्दी शिक्षा' और

‘हिन्दी बँगला शिक्षा’ के सम्बन्धमें भी हो रही है। हमारी सफलता, सम्पादकोंकी विशेष कृपा, ग्राहकों और अंगरेजी बँगला सीखनेवालोंकी विशेष कदरदानीने एक विषम चलचल मचा दी है। हम नहीं जानते—साहित्यसेवी कहलाकर, बहुत दिनोंतक हिन्दी-माताकी सेवा भी करनेपर, हिन्दीके विद्वानों और सुलेखकोंमें अपनी गणना कराकर तथा ऊँची गद्दीपर बैठकर भी केवल अपने उदरपालनार्थ ऐसे काम करनेके लिये लोग क्यों तय्यार हो जाते हैं जिनसे केवल उनकी नेकनामी, कीर्ति और विद्वत्तामें ही बड़ा नहीं लगता बल्कि खास उस साहित्यमाताका भी अपकार होता है जिसके भरोसे उनका उदरपोषण होता है। हम जानते हैं कि उनकी गणना अच्छीमें है—परन्तु दुःखकी बात है कि जिस कार्यमें ऐसे लोगोंने अब हाथ डाला है, उसमें उनका अनुभव नहीं है, उतनी विद्वत्ता भी नहीं है और न उस शैलीसे ही वे परिचित हैं जिसकी ऐसी ग्रन्थ-रचनामें विशेष आवश्यकता है। फिर ऐसे कार्य करके, हंस कहलानेका क्या दावा कर साहित्य-माताका अपकार करना क्या उचित है ? क्या एकबार साहित्यसेवी होकर फिर साहित्यकी जिद्द काटनी उन्हें उचित है ? चाहे जो हो, चाहे केवल उदर-पालनके लिये ही वे ऐसे कार्य क्यों न करते हों ; पर हमारी तुच्छ बुद्धिमें योग्य कहलाकर—अयोग्यताका परिचय कदापि न देना चाहिये। कीर्तिको स्थायी रखना ही मनुष्यत्व और

बुद्धिमत्ता है; न कि थोड़े से लोभमें अपनी कीर्ति को जलाञ्जलि देना ही कर्त्तव्य है। दुःख का विषय है कि—मकल के भरोसे पर, परन्तु कानूनी भगड़ों से बचते हुए, ऐसा काम भी ऐसेही साहित्य सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और चोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारत-वासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्या के प्रचारमें बाधा और भारत के नवजीवनोंका अपकार होना सम्भव दिखाई देता है तथा ग्राहक ठगे जाते हैं। एक तो हिन्दीके ग्रन्थोंकी क्या दशा है; यह सभीको मालूम ही है। फिर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि विगाड़कर हिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है ऐसा करनेसे सर्वसाधारणकी शिक्षासे अरुचि हो सकती है बस, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—बात क्या है, हम नहीं लिख सकते; साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ; इससे इतना भी लिख दिया—हमारी बातें सत्य हैं या नहीं, निष्पक्ष और उदार-हृदय समालोचकगण ग्रन्थ हाथमें ले, ध्यानसे पढ़कर तुलना करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय—

हरिदास ।



हिन्दी-बँगला शिक्षा ।

दूसरा भाग ।

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बँगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम “बँगला व्याकरण” है ।

वर्ण-ज्ञान ।

१ । पदके प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

“शवि शड़ित्तेछ्” । यहाँ “शवि” और “शड़ित्तेछ्” ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें “श्चि” इस पदमें च, चि ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और च+अ, च+इ ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं। इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह “ञ्जिञ्जिञ्जि” इस पदमें ञ, ङि, ञ, ञ ये चार छोटे भाग और ञ+अ, ङ+इ, ङ+अ, ङ+अ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं; इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उन्चास वर्ण या अक्षर हैं। उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं :—स्वर और व्यञ्जन। उनमें १३ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण ।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, औ, ओ, ॐ।

* ऋ का प्रायः व्यवहार नहीं होता। केवल कृ, कु, पु इत्यादि कुछ थोड़ीसी धातुओंके लिखनेमें उनकी ज़रूरत होती है, इसीसे कोईकोई लोग, ऋ को छोड़कर, स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं। बँगला भाषामें दीर्घ ऋ नहीं है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

इन्हीं तीन वर्णों के रूपान्तर हैं । ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ही उ, ए, अ, माने जाते हैं । जैसे—
ऊँ, दूँ, नखन इत्यादि ।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे () ऐसा चिन्ह देना पड़ता है ; इस चिन्ह या निशानका नाम 'हसन्त चिन्ह' है * । जैसे—मछाँटे इत्यादि ।

७ । क से ग तक, पच्चीस वर्णों को स्पर्शवर्ण कहते हैं । स्पर्श वर्ण पाँच वर्गों में विभक्त हैं ; आदि के या पहले वर्ण को लेकर वर्गका नाम होता है । जैसे—क वर्ग, छ वर्ग, ट वर्ग, ठ वर्ग, ड वर्ग ।

८ । य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है,

* व्यञ्जन वर्ण के बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्ण में मिल जाता है । जैसे—जन = ज् + अ + न् + अ ।
दिन = द् + इ + न् + अ ।
बानिका = ब् + आ + न् + इ + क् + आ ।
छत्र = छ् + अ + न् + द् + र् + अ ।

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं ; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है ।

= इसका नाम समान चिन्ह है । + इसका नाम युक्त चिन्ह है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णों का योग या जोड़ समझा जाता है ।

अ, व, म, न, इन चारों का नाम उष्ण वर्ण है ; (१) और (०) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ः) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है ।*

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णों के नामोंमें भी भेद होता है । जैसे—

अ आ इ क थ ग घ ङ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है ; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं ।

इ ए ऋ ॠ ऌ ॡ ऋ ॠ ऌ ॡ ऋ ॠ ऌ ॡ इनका उच्चारण-स्थान तालू है ; इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं । †

श ष ण ट ठ ड ढ न र स ङ इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है ; इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं । ‡

त थ द ध न ल ज इनका उच्चारण-स्थान दन्त है ; इसलिये इन्हें दन्त्य वर्ण कहते हैं ।

उ ऊ ए ओ ऋ ॠ ऌ ॡ इनका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है ; इसीसे इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं ।

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं ।

† य, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है । जैसे ; अयन, शयन, जय ।

‡ ङ और ञ इन दोनों वर्णों का प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है । जैसे—शङ्ख, जङ्गल, मूङ्ग, दृङ्ग ।

७ ७, इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालू है; इसलिये ये कण्ठ-तालव्य वर्ण हैं।

७ ७ इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओष्ठ है; इसवास्ते ये कण्ठओष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण-स्थान दन्त और ओष्ठ है; इसलिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं; इसलिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्ण का उच्चारण-स्थान विसर्ग का उच्चारण-स्थान होता है। विसर्ग का उच्चारण स्वर वर्ण के बिना, 'श्' के उच्चारण की तरह होता है। जैसे
शूनः = शूनश् ।

विसर्ग जिस स्वर वर्ण के बाद होता है वह दीर्घ की तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकालः ।

संयुक्त वर्ण ।

१० । यदि एक व्यञ्जन वर्ण के बाद एक या उससे ज़्यादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्ण के पहलेका वर्ण (पूर्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है । जैसे—
 $\text{व्} + \text{द} = \text{वद}$; $\text{भ्} + \text{न} = \text{भन}$; $\text{न्} + \text{द} + \text{र्} = \text{न्दर्}$ ।

थोड़ेसे संयुक्त वर्णों का रूप बदल जाता है । वे नीचे दिखाये गये हैं । जैसे— $\text{ङ} + \text{ग} = \text{ङ्ग}$, $\text{झ} + \text{ए} = \text{झए}$, $\text{क} + \text{घ} = \text{कघ}$,
 $\text{च} + \text{ए} = \text{चए}$, $\text{द} + \text{ध} = \text{दध}$, $\text{त} + \text{त्र} = \text{तत्र}$, $\text{क} + \text{त} = \text{कत}$, $\text{घ} + \text{ग} = \text{घग}$,
 $\text{इ} + \text{न} = \text{इन्}$, $\text{न्} + \text{थ} = \text{न्थ}$, $\text{इ} + \text{भ} = \text{इभ}$, $\text{त्} + \text{त} = \text{त्त}$, $\text{प} + \text{त्र} = \text{पत्र}$,
 $\text{ग} + \text{त्र} = \text{गत्र}$ इत्यादि ।

र किसी व्यञ्जन वर्ण के पहिले रहनेसे, बादके वर्ण के साथे पर जाकर () ऐसा आकार धारण करता है । इसका नाम रेफ है । रेफ युक्त कोई कोई वर्ण का द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं । जैसे— $\text{र} + \text{द} = \text{रद}$ । और आर्द्ध, षर्द्ध, निष्कर्द्ध इत्यादि ।

‘इ’ द्वित्व होनेसे ‘इइ’, ‘थ’ द्वित्व होनेसे ‘थथ’, ‘ध’ द्वित्व होनेसे ‘क’, और उ द्वित्व होनेसे ‘उ’, ऐसा रूप धारण करता है । थ, र और न युक्त होनेसे ‘श’ कार और ‘ज’ कार का उच्चारण ‘इ’ कार के समान होता है ; जैसे—आइक, शक, ज्ञान इत्यादि । ‘ज’ कारके साथ उ या थ युक्त होनेसे वह ‘ज’ कार ‘च’ कार की तरह उच्चारित होता है । जैसे—अच्छाव, अवस्थिति । जब ‘इ’ के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह ‘इ’ नीचेवाले वर्ण के बाद उच्चारित होता है ; जैसे आश्नाद = आन् + शद, गथाइ = गथान् + इ, मश = मय् + इ इत्यादि ।

जब 'व' किसी वर्ण में संयुक्त होता है तो उसका उच्चारण 'इय' और अन्तःस्थ 'व' किसी वर्ण में युक्त होनेसे उच्चारण 'उय' ऐसा होता है ; जैसे—दिव्य = दिव् + इय, विश्व = विन् + उय इत्यादि ।

सन्धि प्रकरण ।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं ।

१२। सन्धि दो प्रकार की है ;—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि ।

१३। एक स्वर वर्ण के साथ दूसरे स्वर वर्ण के मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं ।

१४। व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण के मिलनको व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं ।

स्वर-सन्धि ।

१५। अ के बाद अ या आ रहनेसे, और दोनों के मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व वर्ण में मिल जाता है । जैसे शीत + अ१२ = शीता१२ । यहाँपर शीत शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अ१२ शब्दका अ है ; इसलिये उन दोनों के मिलनसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीताँश"

पद हुआ । इसी तरह भीत + अश्वर = भीतश्वर, कुश + आगम = कुशीगम ।

१६ । आ के बाद अ अथवा आ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आ होता है, और वह आ पूर्व वर्ण में मिल जाता है । जैसे—विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास । यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है ; इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व-वर्ण 'य' में मिलकर “विद्याभ्यास” पद हुआ । इसी तरह तारा + आकार = ताराकार, गश + आशय = गशाशय इत्यादि ।

१७ । ऐ के बाद ई या ऐ रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ऐ होती है, वह ऐ पूर्व वर्ण में मिल जाती है । जैसे—अति + ऐत = अतीत । यहाँ पर अति के इकार के बाद इत शब्दका इकार है ; इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर “अतीत” पद हुआ । इसी तरह शिबि + ऐश्वर = शिबीश्वर, शिबि + ऐश = शिबीश इत्यादि ।

१८ । ओ के बाद ई या ओ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होती है वह ओ पूर्व वर्ण में मिल जाती है । जैसे—अती + ओव = अतीव । यहाँपर ईकार के बाद इ है ; इसलिये दोनों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया ; जिससे अती + इव = अतीव के हुआ : इसी तरह पृथी + ऐश्वर = पृथीश्वर, कानी + ऐश = कानीश इत्यादि ।

१८। ऐ के बाद ऐ या ऐ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऐ होता है, यह ऐ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विधू + उदय = विधूदय। इसी तरह माधू + उलि = माधूलि। तनू + उर्क = तनूर्क। विधू + उदय = विधूदय। यहाँपर विधु शब्दके ऋस्वके बाद उदयका उ है; इसलिये ऋस्व उ के बाद ऋस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ज हुआ। अब इसी दीर्घजके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। माधूलि—माधू + उलि = माधूलि। यहाँपर साधु इस शब्दके ऋस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ऋस्व उ है; इसीसे ऋस्व उकार के बाद ऋस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ज हुआ और वह ज पूर्व वर्ण ध कारमें मिलकर “साधूक्ति” पद बना। तनूर्क—तनू + उर्क = तनूर्क। यहाँपर तनु शब्दके ऋस्व उकारके बाद ऊर्ध्व शब्दका दीर्घ ज है; इसलिये ऋस्व उकारके बाद दीर्घ ज रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ज हुआ और वह दीर्घ ज पूर्ववर्ण न में मिलकर “तनूर्क” पद बना।

२०। ऐ के बाद ऐ या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐ होता है, और ऐ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—तनू + उद्वेग = तनूद्वेग। यहाँपर तनूके ज के बाद उद्वेगका उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ज होगया और पूर्ववर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह भू + उर्क = भूर्क इत्यादि।

२१। अ या आ के बाद ऐ या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए होजाता है; और ए पूर्व वर्ण में मिलजाता है। जैसे,—नग + ऐअ

= नगेश, मछ + ईश = मछेश, ब्रमा + ईश = ब्रमेश, धन + ईश्वर = धनेश्वर, उगा + जेश = उगेश । नग + इन्द्र = नगेन्द्र ;—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रकी इ है ; इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्ववर्ण में मिलकर नगेन्द्र पद बना है । धन + ईश्वर = धनेश्वर ;—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है । रमा + ईश = रमेश ; यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है ।

२२ । अ या आ के बाद उ या ए रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होता है, और वह ओ पूर्ववर्ण में मिल जाता है । जैसे;—मृषा + उदय = मृषोदय, नल + उदय = नलोदय, तरुण + उग्नि = तरुणोग्नि, महा + उदधि = महोदधि, गङ्गा + उग्नि = गङ्गोग्नि । सूर्य + उदय = सूर्योदय ;—यहाँ पर अकारके बाद ऋस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्ण में मिलकर सूर्योदय पद बना । महा + उदधि = महोदधि ;—यहाँ पर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है । इसी तरह नलोदय, तरुणोग्नि, गङ्गोग्नि हैं ।

२३ । अ या आ के बाद श रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अश् होता है । अश् का अ पूर्ववर्ण में मिल जाता है और श् पर वर्ण के साथे चला जाता है । अर्थात् रेफ हो जाता है, जैसे,—देन + शधि = देनशि, उतुग + शधि = उतुगशि, जमग +

शनि = अशमर्णि, मश + शनि = मशर्णि । देव + ऋषि = देवर्षि;—
 यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर्
 हुआ; अकार पूर्ववर्ण में मिल गया और र् के पर वर्ण ष के
 माथेपर चले जानेसे “देवर्षि” पद बना । महा + ऋषि = महर्षि;
 यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर्
 हुआ है । आकार पूर्ववर्ण में मिल गया और र् पर वर्णके माथेपर
 चला गया है । इसी तरह उत्तमर्णि, अधमर्णि भी बने हैं ।

२४ । तृतीया तत्पुरुष समासमें अ या आ के बाद
 शत शब्द रहनेसे पूर्ववर्ती अ या आ के साथ मिलकर शत
 शब्द का आर् होजाता है आर् का आ पूर्ववर्णमें मिल जाता है
 और र् पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात् रेफ
 हो जाता है । जैसे,—शोक + शति = शोकार्छ, उष्ण +
 शति = उष्णार्छ । * शोक + ऋति = शोकार्त्त;—यहाँ पर शोक
 शब्दके अ के बाद ऋति शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे अर् हुआ; आ पूर्ववर्ण क में मिल गया और र पर
 वर्ण तकारमें जाकर “शोकार्त्त” पद बना ।

२५ । अ या आ के बाद ए या ऐ रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे ऐ होता है । एकार पूर्ववर्ण में मिल जाता है जैसे—
 शत + एक = शतैक, बार + एक = बारैक, दिन + एक = दिनैक,
 जन + एक = जनैक, एक + एक = एकैक, शत + एका =

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्ण का विकल्पमें हित्व होता है, जैसे—
 पूर्वक, पूर्वक; निर्दय, निर्हय इत्यादि ।

मैत्रेय, विपुल + ऐश्वर्या = विपुलेश्वर्या, मश + ऐरावत = महैरावत, मश + ऐश्वर्या = महेश्वर्या, अतुल + ऐश्वर्या = अतुलेश्वर्या ।
 वार + एक = वारैक, —यहाँ पर वार शब्दके अकारके बाद एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर “वारैक” पद बना ।
 अतुल + ऐश्वर्य्य = अतुलेश्वर्य्य, —यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है । महा + ऐरावत = महैरावत ; —यहाँ पर आकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है । इसीतरह दिनैक, जनैक, एकैक, मतैक्य, विपुलेश्वर्य्य, महैश्वर्य्य हैं ।

२६ । अ या आ के बाद ओ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ हो जाता है । वही ओ पूर्व वर्णमें मिल जाता है । जैसे—जल + ओकाः = जलोकाः, पत्र + ओष = पत्रोष, नव + ओषधि = नवोषधि, मश + ओषधि = महोषधि, गङ्ग + ओत्सुका = गतोत्सुका इत्यादि । जल + ओकाः = जलोकाः ; —यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओकाः शब्दका ओकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और वही ओकार पूर्व वर्ण लकारमें मिलकर “जलोकाः” पद बन गया । इसी तरह, पत्रोष, नवोषधि इत्यादि भी बने हैं ।

२७ । ऐ और औ के अलावः और कोई स्वरवर्ण ई या औ के बादमें रहनेसे ऐवाँ के स्थानमें ए हो जाता है, वह ए पूर्व वर्णमें मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल जाता है ।

जैसे—यदि + अपि = यद्यपि, अति + आशय = अत्याशय, अति + आशा = अत्याशा, अति + आदेश = अत्यादेश, नदी + उथित = नद्युथित, काली + आशय = काल्याशय इत्यादि । यदि + अपि = यद्यपि ;—यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है ; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्ववर्ण दकारमें संयुक्त होकर “यद्यपि” पद बना । इसी तरह अत्याहार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं ।

२८ । उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहने से उ वा ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है । जैसे—सु + आगत = आगत, माधू + ऐच्छा = माध्वीच्छा, तनु + आच्छादन = तन्वाच्छादन, चक्षू + आदि = चक्षुः इत्यादि । सु + आगत = स्वागत :—यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है ; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ । व और परवर्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे “स्वागत” पद बना ; इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं ।

२९ । अ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे अके स्थानमें इ होता है ; वह इ पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

परवर्ती स्वर उसी रकारमें मिल जाता है । जैसे—गाउ + आछा = गाआछा; इत्यादि । माह + आज्ञा = मात्राज्ञा ;—यहाँ पर माह शब्दके ऋकारके बाद आज्ञाका आकार है ; इससे ऋ भिन्न स्वर वर्ण बादमें रहनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और वह र और परवर्ती स्वर वर्ण आज्ञाका आकार पूर्व वर्ण तकारमें मिलकर “मात्राज्ञा” पद बना ।

३० । स्वरवर्ण पर रहनेसे पूर्ववर्ती ए, ऐ, ओ, ऊ के स्थान में क्रम क्रमसे अय, आय, अव, आव होता है यानी ए की जगह पर अय, ऐ की जगह पर आय, ओ के स्थानमें अव, और ऊ के स्थानमें आव, होता है ; अय, आय, अव, आव के अ और आ पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्ती स्वर ऐ, य में और ओ, व में मिल जाता है ।—जैसे—ने + अन = नयन, विने + अक = विनायक; गै + अक = गायक, पो + अन = पवन, भो + अन = भवन, शो + अन = शवन, नो + ईक = नाविक । ने + अन = नयन :—यहाँ पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अयका अकार पूर्व वर्ण नकार में मिलकर “नयन” पद बना । इसी तरह विने + अक = विनायक;—यहाँ पर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयका आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर “विनायक” पद बना । इसी तरह गै + अक = गायक पो + अन = पवन ;—यहाँ पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवका अकार पूर्व वर्ण प-

कारमें मिलकर 'पवन' पद बना; इसी तरह 'भवन' शब्द भी बने हैं। नौ + इक = नाविक;—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन-सन्धि ।

३१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, श पर रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—बाक् + आङ्गिर = बागाङ्गिर, बाक् + इन्द्रिय = बागिन्द्रिय, दिक् + अस्तु = दिगस्तु, इक् + इन्द्रिय = इगिन्द्रिय, दिक् + गज = दिग्गज, बाक् + ज्ञान = बाग्ज्ञान, बाक् + दान = बाग्दान, बाक् + देवी = बाग्देवी, दिक् + विदिक = दिग्विदिक, षट् + दल = षड्दल, उट् + घाटन = उट्घाटन, सट् + विद्या = सट्विद्या, जगत् + बल्लभ = जगद्बल्लभ, अप + ज = अज इत्यादि।

३२। पञ्चम वर्ण पर रहनेसे वर्गके पहले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है; और अगर द के बाद न या म रहे तो उस द के स्थानमें न हो जाता है। जैसे—दिक् + नाग = दिङ्नाग, दिक् + मुख = दिङ्मुख, अप् + मय = अम्भय, थत् + मुख = थम्मुख, उट् + नयन = उट्मयन, तद् + नीर = तन्नीर।

३३। च या छ पर रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या द् के स्थानमें च होता है। जैसे—शर९ + च्छ = शरच्छ, उ९ + चार९ = उचार९, उ९ + छेद = उछेद, तद् + चर९ = तच्छर९, तद् + छात्र = तच्छात्र।

३४। ज अथवा ञ पर रहने से पूर्ववर्ती ९ या द् के स्थानमें ज होता है। जैसे—उ९ + जल = उज्जल, उ९ + जटिका = उज्जटिका।

३५। ट या ठ पर रहनेसे पूर्ववर्ती ९ और द् के स्थानमें ट होता है। जैसे—उ९ + टलन = उट्टलन, तद् + ठकार = तट्-ठकार।

३६। ड या ढ पर रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या द् के स्थानमें ड होता है। जैसे—उ९ + डीन = उड्डीन, तद् + टका = तड् टका, रु९ + टका = रुड् टका।

३७। यदि च या ज के बाद न रहे तो न के स्थानमें ञ होता है। जैसे—याच् + ना = याच् ञा, राज् + नी = राज् ञी।

३८। यदि ल पर हो तो पूर्ववर्ती ९, द् और न् के स्थानमें ल होता है, और न् के पूर्ववर्णमें चन्द्रविन्दु लग जाता है। जैसे—उ९ + लास = उल्लास, भव९ + लेख = भव-ल्लेख, उ९ + लेख = उल्लेख, उ९ + लज्जन = उल्लज्जन, तद् + लोभ = तल्लोभ, एतद् + लीन = एतल्लीन, विद्वान् + लेखक = विद्वल्लेखक।

३९। यदि ९ या द् के बाद न रहे तो ९ और द् के

स्थानमें छ् और भ् के स्थानमें छ् होता है । जैसे—उव९
 श९९ = उवछ्९९, उत + श्छान = उछ्छान, जग९ + श्रगा
 जगछ्गरा, तद् + श्शुक = तछ्छुक ।

४० । ९ या द के बाद ह रहनेसे और दोनोंके ि
 के होता है । जैसे,—उ९ + श९र = उकार, उ९ + इत = उ
 तद् + इरिग = तकरिग ।

४१ । व के बाद ९ या थ रहनेसे ९ के स्थानमें ट
 थ के स्थानमें ठ होता है । जैसे—आकृष् + त = अ
 मष् + थ = वष्ठ ।

४२ । स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित म् के
 में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रह
 म् के स्थानमें उसी वर्गका पञ्चम वर्ण होता है ।
 अन्तःस्थ और जष्मवर्ण परे रहनेसे म् के स्थानमें केवल
 स्वार होता है । जैसे—मम् + कीर्ण = मकीर्ण या म९कीर्ण,
 कर = कि९कर या कि९कर, मम् + गति = म९गति या म९ग
 + टित = कि९कि९ या कि९कि९, मम् + पूजा = म
 म९पूजा, मम् + भूति = म९भूति या म९भूति, मम् +
 मम् + योग = म९योग, मम् + रक्षण = म९रक्षण, मम् + ल
 मम् + वाद = म९वाद, मम् + शय = म९शय, मम् + रुद =

४३ । व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे दिव् शब्द
 द्वा होता है । जैसे—दिव् + लोक = द्वालोक,
 = द्वाभवन ।

४४। स्वर वर्णके बाद ह रहनेसे ह के स्थानमें छ होता है। जैसे—परि + छेद = परिच्छेद, अब + छेद = अबच्छेद, स + छिद्य = सच्छिद्य, वृक्ष + छाया = वृक्षछाया, गृह + छाया = गृहछाया।

४५। उ९ शब्दके बाद श और सुष्ठु धातुके “ज” का लोप होता है। जैसे—उ९ + शान = उत्थान, उ९ + सुष्ठु = उत्तुष्ठु।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे वह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व क्रमशः स और ष होता है अर्थात् समके बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—सम् + करण = संकरण, सम् + कृत = संकृत, सम् + कार = संकार, परि + कार = परिकार।

४७। च या छ बादमें रहनेसे विसर्ग के स्थान में ण होता है। जैसे—मनः + चकोर = मनश्चकोर, निः + चय = निश्चय, शिरः + छेद = शिरश्छेद, उरः + छद् = उरश्छद्।

४८। ट या ठ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें ष होता है। जैसे—धनूः + टकार = धनूश्चकार।

४९। त या थ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें स होता है। जैसे—निः + तेज = निश्तेज, दूः + तर = दूश्तर, इतः + ततः = इतश्चततः।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अर्थात् य, र, ल, व, श, के परे रहनेसे अकार और अकारके बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे “उ” होता है। वह पूर्व ओकार वर्गमें

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है । जैसे—ततः + अधिक = ततोधिक, मनः + गत = मनोगत, अधः + गमन = अधोगमन, सद्यः + जात = सद्योजाति, पयः + निधि = पयोनधि, यशः + धन = यशोधन, मनः + योग = मनो-योग, मनः + वेग = मनोवेग, इत्यादि ।

५१ । स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य र ल व ह के परे रहनेसे अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थानमें र् होता है । यदि स्वर वर्ण या ग, घ, ङ, ज, बा, ए, उ, ङ, ङ, द, ध, न, व, भ, म और य र ल व ह के परे रहता है तो अकारके बादके र जात विसर्गके स्थानमें र होता है । पूर्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता । जैसे—अहः + अह = अहरह, प्रातः + आश = प्रातराश, पुनः + जन्म = पुनर्जन्म, अन्तः + आत्मा = अन्तरात्मा, अन्तः + देश = अन्तर्देश, पुनः + उक्ति = पुनरोक्ति ।

५२ । स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य र ल व ह परे रहने से अ आ भिन्न स्वरवर्णके बाद के विसर्ग की जगह र् होता है । जैसे—निः + तयः = निर्भय, बहिः + गत = बहिर्गत, दूः + आत्मा = दूरात्मा, द्विः + उक्ति = द्विरुक्ति, दूः + लभ = दूलभ ।

५३ । र परे रहने से विसर्ग के स्थानमें जो र् होता है, उस र् का लोप होता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है ।

जैसे—निः + रोग = नीरोग, निः + रस = नीरस, निः + रव = नीरव, चक्रुः + राग = चक्रुराग ।

५४ । श् परे रहने से, पूर्ववर्ती विसर्गका विकल्प में लोप होता है । जैसे—गनः + श् = गनश्च या गनःश्च, दुः + श् = दुश्च, इत्यादि ।

५५ । समास में क थ प क परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से स होता है ; और वही स अगर अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो श् हो जाता है । जैसे—निः + कर्मा = निकर्मा या निःकर्मा ; भाः + कर = भास्कर, भाःकर ; दुः + कव = दुस्कर, दुःकर ; तेजः + कर = तेजस्कर, तेजःकर ; भाः + पति = भास्पति, भाःपति ; निः + फल = निःफल, निःफल ।

५६ । अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्गका लोप होता है । लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती । जैसे—अतः + एव = अतएव, पयः + ओघ = पयओघ ।

५७ । बंगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्गका विकल्पमें लोप होता है । यथा—फलतः, फलत ; विशेषतः, विशेषत ; वस्तुतः, वस्तुत ; मनः, मन ।

रात्वविधान ।

“रा” के लगानेके स्थान ।

५८ । श, र, व के बादका दन्त्य न मूर्धन्य होता है । जैसे—शग, रग, तग, विदीर्ग, दिक्, उक्, मश्चिक् ।

५८ । ख, झ, ष के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, इ व व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्धन्य होता है । जैसे—कारण, दर्पण, भाषाण, निर्वान, रुक्मिणी, रुग्ण, विश्वरुण ।

६० । उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता । जैसे—अर्चना, कीर्तन, रगना ।

६१ । पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्धन्य नहीं होता जैसे—दूरपनोर, दूर्नाग, दूर्नय ।

६२ । क्रियाके अखीरका दन्त्य न मूर्धन्य नहीं होता । जैसे—करेन, धरेन, मारेन ।

६३ । त, थ, द, ध, संयुक्त न “ग” नहीं होता । जैसे—प्रांशु, झांशु, ब्रह्म ।

योड़से स्वाभाविक मूर्धन्य १ विशिष्ट पद है । जैसे—वाणि, मणि, बेणी, गुण, कङ्कण, गण, विपणि, पण, आपण, बीणा, झाण, निपुण, लवण, कणिका, वाण, मङ्कुणा, शोण, कोण, कल्याण, कणा, अणु, काण, धूण, वणिक इत्यादि ।

६४ । अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और व इन वर्णोंके किसी भी गरिस्थित पदके बीचका दन्त्य न मूर्धन्य होता है । विसर्ग व्यवधान रहने पर भी यह होता है । लेकिन मां प्रत्ययका न मूर्धन्य नहीं होता । जैसे—गुग्गु, वक्कगान, जिगीवी, टिकीवी, गरिकार, निषेध, अधिष्ठान, आविकार इत्यादि ।

कुछ शब्दोंका स स्वाभाविक ही मूर्धन्य होता है । जैसे

भाया, पायाग, कलाय, आयाट, कलाय, कषाय, कर्ष, कुलाय
इत्यादि ।

पद ।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं । यथा ; (१) विशेष्य
(२) विशेषण, (३) सर्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया ।

विशेष्य ।

कोई चीज़, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको
विशेष्य कहते हैं । जैसे;—बद्ध, श्रद्धिका ; राग, यत्न ; गाय,
मनुष्य ; भद्रता, महत्त्व ; गमन, भोजन इत्यादि ।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं । इनके
ज्ञानसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है ।

लिङ्ग ।

जिसके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है
उसे लिङ्ग कहते हैं ।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं ।—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और
क्लीवलिङ्ग ।

बंगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता । फल, जल, अरण्य प्रभृति स्त्रीलिङ्ग शब्दोंका रूप पुलिङ्ग जैसा होता है ।

जिन शब्दोंसे पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुलिङ्ग कहे जाते हैं । जैसे;—गशूय, बालक, मिश्र, अश्व इत्यादि ।

जिन शब्दोंसे स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं । जैसे;—स्त्री, कन्या, शरिणी, नारी, गहिषी, शक्तिनी, घोटेकी, कूकुरी इत्यादि ।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एवं ज्योत्स्ना, इनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—सौदामिनी, वसुमती, यामिनी, इत्यादि ।

याद रखना चाहिये कि बिछ्छा, तूखा, बीणा, सभा, कचि, नाड़ी, बनिता, तारा, श्रेणी, शोभा, धूनि, नदी, नीति, मरि, बेनी, सौदामिनी, लता, लज्जा, कथा, नौका, नासिका, ग्रीवा, बिडा, भाषा, शरिदा, जिस्वा, पूकरिणी इत्यादि थोड़ेसे शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं ।

सामान्य स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय ।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें “अ” (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में “अ” के स्थानमें “आ” (आकार) हो जाता है ।

जैसे;—क्रीण, क्रीणा; मर्व, मर्वा; मवल, मवला; दुर्वल,

दूर्वला ; राग, रागा ; मनोहर, मनोहरा ; कोकिल, कोकिला ;
कृष्ण, कृष्णा ; दीर्घ, दीर्घा इत्यादि ।

(ख) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें “अ” होता है, स्त्रीलिङ्गमें “अ” के स्थानमें “ऐ” हो जाती है । जैसे—
ब्राह्मण, ब्राह्मणी ; मृग, मृगी ; ब्राह्मण, ब्राह्मणी ; अश्व, अश्वी ;
गोप, गोपनी ; मारु, मारुनी ; पिशाच, पिशाची ; दानव, दानवी ;
हंस, हंसी ; गान्धर्व, गान्धर्वी ; कुरङ्ग, कुरङ्गी ; सर्प, सर्पनी ; व्याघ्र,
व्याघ्री ; वज्रक, वज्रकी ; सिंह, सिंही ; मत्स्य, मत्स्यी इत्यादि ।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें मय, दृश, चर और कर शब्द
होते हैं उनका स्त्रीलिङ्ग प्रायः ईकारान्त होता है यानी
उनके अन्तमें “ऐ” लगा दी जाती है । जैसे—प्रसन्नमय, प्रसन्न-
मयी ; मृगय, मृगयी ; वादृश, वादृशी ; एतादृश, एतादृशी ;
खेचर, खेचरी ; सुखकर, सुखकरी ; जलचर, जलचरी ; शुभकर,
शुभकरी ; स्वर्णमय, स्वर्णमयी ; हितकर, हितकरी ; किङ्कर,
किङ्करी ; सहचर, सहचरी ; इत्यादि ।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें “इन्” होता है, उनके
स्त्रीलिङ्गके रूपमें उनके अन्तमें “ऐ” हो जाती है । जैसे—
दायिन्, दायिनी ; विधायिन्, विधायिनी ; गानिन्, गानिनी ;
जानिन्, जानिनी इत्यादि ।

(ङ) जिन शब्दोंके अन्तमें “वान्” होता है, उनके
स्त्रीलिङ्गमें “वती” के स्थानमें “वती” हो जाती है । जैसे—
गुणवान्, गुणवती ; रूपवान्, रूपवती ; इत्यादि ।

(च) जिन शब्दोंके अन्तमें “अक” होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें “अक” के स्थानमें “इका” हो जाता है। जैसे;—
पाठक, पाठिका ; नायक, नायिका ; दासक, दासिका ; बानक,
बानिका ; गायक, गायिका इत्यादि ।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्रायः “जे” कारान्त हो जाते हैं। जैसे;—शूकेश, शूकेशी ; शूथ, शूथी इत्यादि ।

(ज) प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें “जे” होती है; किन्तु प्रथम, द्वितीय और तृतीय के बाद “आ” होता है। जैसे;—
चतुर्थी, पक्षमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी इत्यादि और
प्रथमा, द्वितीया, तृतीया ।

(झ) गुणवाचक “उ” कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे “जे” होती है और पहले “उ” के स्थानमें “व” होता है। जैसे;—गुरु, गुरवी ; लघु, लघी ; शूद्र, शूद्री ; इत्यादि ।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें “ऐयस” प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें “जे” होजाती है। जैसे;—लक्ष्मीयस, लक्ष्मीयसी ; गरीयस, गरीयसी ; भूयस, भूयसी ; प्रेयस, प्रेयसी इत्यादि ।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें “अ९” होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें प्रायः पीछे “जे” हो जाती है। जैसे—मह९, महती ; म९, मती ; शुभव९, शुभवती इत्यादि ।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें “ग९” और “व९” होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें “जे” हो जाती है । जैसे;—

| शब्द | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|---------|-----------|-------------|
| श्रीम९ | श्रीमान् | श्रीमती |
| दयाव९ | दयावान् | दयावती |
| ज्ञानव९ | ज्ञानवान् | ज्ञानवती |

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें “ता” और “ति” प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे;—गति, मति, भक्ति, लघुता, भद्रता इत्यादि ।

(ढ) मातृ, दूहितृ, स्वयं, ननन्दी, यातृ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें “श्च” होती है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें, शब्दके अन्तमें “जे” हो जाती है और “श्च” के स्थानमें “र” होजाता है । जैसे;—

| शब्द | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|--------|----------|-------------|
| मातृ | माता | मात्री |
| विधातृ | विधाता | विधात्री |
| कर्तृ | कर्ता | कर्त्री |

लेकिन मातृ का माता और दूहितृ का दूहिता इत्यादि होता है ।

(ण) काल, गौर, तरुण, पुत्र प्रभृति शब्दोंके स्त्रीलिङ्गमें दीर्घ “जे” होजाती है । जैसे;—

काल, काली ; गौर, गौरी ; तरुण, तरुणी ; कुमार, कुमारी ; पुत्र, पुत्री ; मङ्गल, मङ्गली ; नगर, नगरी ; सुन्दर, सुन्दरी ;

चण्ड, चण्डी ; पितामह, पितामही ; नर्तक, नर्तकी ; नट, नटी ; नद, नदी ; घटे, घटी ; किशोर, किशोरी ; नाग, नागी ।

(त) कुछ शब्दोंके रूप स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्गमें एकसे होते हैं । जैसे—मयाटे, विवाटे, कवि इत्यादि ।

(थ) कुछ शब्द स्त्री जातिका बोध न कराने पर भी सदा स्त्रीजातिके रूपमें गिने जाते हैं । जैसे—आगलकी, हरोतकी, बदवी, कानी, कांशी, कावेरी, कदली, मथूबा इत्यादि ।

(द) कुछ ऊँख “ई” कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्पसे “ऐ” कारान्त हो जाते हैं । जैसे,—रजनि, रजनी ; रात्रि, रात्री ; श्रेणि, श्रेणी ; भूमि, भूमी ; मृत्ति, मृत्ती ; इत्यादि ।

(ध) जनक प्रभृति कुछ शब्दोंका स्त्रीलिङ्गके रूपमें भेद होता है । जैसे—

जनक, जननी ; पिता, माता वर, कथा ; भ्राता, भगिनी ; नर, नावी ; पुकड़, स्त्री ; हिम, हिमानी ; मामा, मामी ; बुढ़ा, बुड़ी ; ठाकुर, ठाकुराणी ; चण्डाल, चण्डालिनी ; शुक, सारी इत्यादि ।

(न) कुछ पुंलिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्गके रूप नीचे और दिखाये जाते हैं । जैसे :—

| पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|----------|-------------|----------|-------------|
| राज | राज्नी | विद्वान् | विद्वसी |
| रुद्र | रुद्राणी | मातुल | मातूलानी* |

* मातूल शब्दके स्त्रीलिङ्ग में तीन रूप होते हैं :—
मातूलानी, मातूली, मातूला ।

| पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|----------|-------------|----------|-------------|
| इन्द्र | इन्द्राणी | ब्रह्मा | ब्रह्माणी |
| युवा | युवती | भव | भवानी |
| वरुण | वरुणानी | पापीयान् | पापीयसी |
| वैश्या | वैश्या | दाम | दामी |
| शूद्र | शूद्रा | पौल | पौली |
| दोहित्र | दोहित्री | खुड़ा | खुड़ी |

वचन ।

जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे “वचन” कहते हैं ।

वचन दो प्रकारके होते हैं :—

(१) एकवचन ।

(२) बहुवचन ।

एक वचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है । जैसे ; बालक ।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है । जैसे ; बालकेवा ।

“बालक” कहनेसे केवल एक बालक और “बालकेरा” कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं ।

बहुवचन में शब्दके पीछे रा, एवा, दिग, गग, गुला, गुलि,

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं । जैसे—मनूशेरा, लोकगुला,
पूखकगुनी ।*

पुरुष ।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते हैं । जैसे ;—

यदु पड़ितेछे = यदु पढ़ता है ।

रामके पड़ाओ = रामको पढ़ाओ ।

यहाँ “यदु” कर्त्ताकारक है और “राम” कर्मकारक है ।
अतएव “यदु” और “राम” में से प्रत्येक कारक के आश्रय
है । इसीसे इन में से प्रत्येक “पुरुष” कहा जाता है ।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं :—

(१) उत्तम पुरुष । जैसे ; आमि (मैं)

(२) मध्यम पुरुष । जैसे ; तूमि (तुम)

(३) प्रथम पुरुष । जैसे ; तिनि (वह)

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें रा, एरा, चिन्ह नहीं
लगाये जाते । ऐसे शब्दोंके साथ गुलि, गुला, मकल, मगूश
इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं । नीचे दर्जेके प्राणि-
वाचक शब्दोंके अन्तमें भी रा, एरा का प्रयोग नहीं होता ।
उनके अन्तमें भी गुला, गुलि, इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं ।
जैसे ; पत्रगुलि, जनविन्दू मकल, पत्रगुलि, कीटगुला इत्यादि ।
ऐसा कभी नहीं होता—पत्रेरा, जनविन्दूरा, पत्रेरा,
कीटेरा इत्यादि ।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, ये, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं । विभक्ति द्वारा ही बचन और कारक जाने जाते हैं ।

कारक ।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं । जैसे बालक थेलितेछे, आमि बुक्क देथितेछि, छुमि अल्ल द्वारा शांथा कडुन कर ।

यहाँ खेलितेछे, देखितेछि और कर्त्तन, ये तीनों क्रिया हैं । खेलनेका काम बालक करता है ; इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है ; अतएव बालक एक कारक है । आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है सुतरां देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है । अतएव आमि और वृक्ष दोनों ही कारक हैं ।

कारक छै प्रकारके होते हैं । जैसे ;—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण ।

कर्त्ता ।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं । कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति

होती है । जैसे ; राम पुस्तक पढ़ितेछे, शिशु चाँद देखितेछे, राजा आसितेछेन इत्यादि ।

यहाँ पर पढ़ितेछे क्रियाका “कर्त्ता” राम है ; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं । राम पुस्तक पढ़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है ? राम । इसलिये “राम” कर्त्ता है । शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है ? शिशु ; इसलिये “शिशु” कर्त्ता है । राजा आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन ? राजा ; इसलिये ‘राजा’ कर्त्ता है ।

कर्म ।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म कहते हैं । कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है । कर्मकी विभक्तियों के चिन्ह ये हैं के, रे, एरे अथवा य । जैसे ; राम शरिके धरितेछे, शिशु मांस खाय, राम पुस्तक पढ़ितेछे इत्यादि ।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना । क्रिया में “कौन” प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है ।

श्याम हरिके धरितेके ; 'धरितेके' क्रिया है, कौन धरितेके ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है ; इस लिये 'श्याम' कर्त्ता है । श्याम क्या वा किसको पकड़ता है ? इस प्रश्नसे हरि मिलता है ; इसलिये "हरि" कर्म है । इसी तरह और उदाहरण समझ लो ।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म रहते हैं, अर्थात् जिज्जमा, दे०रा इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म रहते हैं । इन धातुओंका नाम द्विकर्मक है । जैसे—माता शिशुके चन्द्र देखाइतेकेन, गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेकेन, आगि तारकके टाका दियाछि, श्रीरेन्द्र मजीशके ऐश बनिन इत्यादि ।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेकेन, यहाँ पर 'देखाइतेकेन' क्रिया है । कि देखाइतेकेन ? चन्द्र ; इसलिये "चन्द्र" एक कर्म है । और काहाके देखाइतेकेन ? शिशुके ; इसलिये "शिशुके" और एक कर्म हुआ ; अतएव देखाइतेकेन इस क्रियाके दो कर्म हुए । गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेकेन, यहाँ पर "पड़ाइतेकेन" क्रिया है । कि पड़ाइतेकेन ? काव्य ; इस लिये "काव्य" एक कर्म हुआ । काहाके पड़ाइतेकेन ? शिष्यके । इसलिये "शिष्यके" और एक कर्म हुआ ; अतएव पड़ाइतेकेन क्रिया द्विकर्मक हुई । इसी तरह आगि तारकके टाका दियाछि, यहाँ पर 'दियाछि' क्रिया हुई ; कि

दियाछि ? टाका ; इसलिये “टाका” कर्म है । काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये “तारकके” और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए । धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, यहाँपर “बलिल” क्रिया है । कि बलिल ? इहा ; इसलिये “इहा” एक कर्म हुआ । काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये “सतीशके” यह पद भी एक कर्म हुआ । अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए ।

करण कारक ।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है, उसको करण कारक कहते हैं । करण में तृतीया विभक्ति होती है । जैसे ;—नाश घावा काँठे काटितेछे ; चक्रू घावा चन्द्र देखितेछे, जल घावा भूमि आर्द्र इत्यादि ।

दाय द्वारा काष्ठ काटितेछे ; यहाँ पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है, इसलिये “दाय” करण कारक हुआ । चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे ; यहाँ पर चक्षु द्वारा देखनेकी क्रिया सम्पन्न होती है ; इसलिये “चक्षु” करण कारक हुआ । जल द्वारा भूमि आर्द्र इत्यादि ; यहाँ पर जल द्वारा आर्द्र होनेका काम पूरा होता है ; इसलिये “जल” करण कारक हुआ ।

धारा, दिया, करिया, ते इत्यादि विभक्ति चिन्ही के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है; इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ हैं। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—दख धारा छर्वण करे, नेत्र दिया देखे, यष्टि करिया, नाछिते इत्यादि।

यहाँपर 'दन्त', 'नेत्र', 'यष्टि' और 'लाठि' करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक ।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे—दरिद्रके अन्न दाउ, यहाँ पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म होती है। जैसे—रजकके बख़ दितेछे; यहाँ पर रजक कर्म कारक है।

अपादान कारक ।

जिससे कोई आदमी या चीज़, भौत, चक्षित,

रक्षित, गृहीत, उत्पन्न अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आवृद्ध या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है । अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है । इस विभक्ति का चिन्ह है—इहेते । जैसे—व्याघ्र इहेते भीत इहेतेके ; वृक्ष इहेते पत्र पड़ितेके, दस्यु इहेते धन रक्षा करितेके, मेघ इहेते वृष्टि इहेतेके, पाप इहेते विरत इहेवे, दुष्ट लोक इहेते अन्तर्हित इहेतेके, पुष्प इहेते फल उत्पन्न हय इत्यादि ।

व्याघ्र हइते भीत हइतेके, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होने के कारण “व्याघ्र” अपादान कारक हुआ । वृक्ष हइते पत्र पड़ितेके, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये “वृक्ष” अपादान कारक हुआ । दस्यु हइते धन रक्षा करितेके, यहाँपर दस्युसे धन रक्षा करनेके कारण “दस्यु” अपादान कारक हुआ । मेघ हइते वृष्टि हइतेके ; यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये “मेघ” अपादान कारक हुआ । पाप हइते विरत हइवे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण “पाप” अपादान कारक हुआ । दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेके, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण “दुष्ट लोक” अपादान कारक हुआ । पुष्प हइते फल उत्पन्न हय, यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है ; इसलिये “पुष्प” अपादान कारक हुआ ।

इहेते या थेके इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियाँ हैं । जैसे—पाँच थेके तीन वियोग कर । भङ्गू क

हइते भय पाइतेछे । बाड़ी थेके जान, इत्यादि । यहाँपर “पाँच”, “भल्लूक” और “बाड़ी” अपादान कारक हैं । हइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है ।

अधिकरण ।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे—
वायु सर्व स्थाने आछे, वृक्षे फल आछे, देहे बल आछे, दुग्धे माखन आछे इत्यादि ।

वायु सर्व स्थाने आछे, यहाँ पर “सर्व स्थाने” यह पद ‘आछे’ क्रिया का आधार है इसलिये “सर्व स्थाने” अधिकरण कारक हुआ । वृक्षे फल आछे, यहाँपर ‘आछे’ क्रिया है ; कोथाय आछे ? वृक्षे ; इस लिये “वृक्षे” अधिकरण कारक हुआ । देहे बल आछे, यहाँ पर ‘आछे’ क्रिया है ; कोथाय आछे ? देहे ; इसलिये “देहे” अधिकरण कारक हुआ । दुग्धे माखन आछे, यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है ; इसलिये “दुग्धे” अधिकरण कारक हुआ ।

ते, एते, ए, रा, स,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं । जैसे ;—जले मत्स्य वास कवे, शाखाय किंवा शाखाते वसिंरा काक डाकितेछे इत्यादि ।

यहाँपर “जले, शाखाय या शाखाते” अधिकरण कारक हैं ।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण, कालाधिकरण और भावाधिकरण ।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं । आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं ; विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार ।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर “तद्विषये” (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े ; तो उसका नाम “विषया अधिकरण” होता है । जैसे—शिल्पकारेण शिल्पकर्म्म नै देखाय, अर्थात् शिल्पकार्य में निपुणता है ; शास्त्रेण दर्शिता आछे, यहाँपर “शिल्पकर्मे” और “शास्त्रे” ये दो विषयाधार अधिकरण हैं ।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उ नाम “व्याप्ताधार” है । जैसे—इक्षुते रस आछे, जख में रस है । दूध में गन्ध आछे, अर्थात् दूध में म है, इसलिये यहाँ पर “इक्षुते” और “दुधे” ये दोन व्याप्ताधार अधिकरण हुए ।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने “सामीप्याधार” कहते हैं । जैसे—गङ्गाय वाम कर, गङ्गा के निकट रहता है—ऐसा अर्थ प्रकट होता है ; “गङ्गाय” पद सामीप्याधार अधिकरण है ।

यदि एकाधार हो, तो उसे “एक देशाधिकरण” क जैसे—बने बाय आछे । यहाँपर यह नहीं समझ

कि सारे वन में बाघ हैं; बल्कि यह समझना होगा कि वन के किसी एक स्थान में बाघ है; इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से 'उसको' "कालाधिकरण" कहते हैं; अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हो तो उसको कालाधिकरण कहते हैं । जैसे—प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, मध्याह्ने सूर्योत्तर किरण खरतर हय, तिनि तखन छिलेन ना, यखन याइबे आमिओ याइब, वर्षाय वृष्टि हय इत्यादि ।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काले (सवेरे) समझा जाता है; इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है । मध्याह्ने सूर्योत्तर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है । यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है । जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्दद्वारा समय समझा जाता है; इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ । वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है ।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव-

सम्बन्ध पद ।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धकी कारक नहीं कहते । विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही “सम्बन्ध पद” कहते हैं । सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है । उसका रूप र या ए है । जैसे—रामेर बाड़ी, आमेर काण्ड, आमेर गाछ, छमेर किरण, साधुर उज्जता, सागरेर जन इत्यादि ।

रामेर बाड़ी, यहाँ पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद हैं । बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है ; क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरे का अधिकार नहीं है ; इसलिये “रामेर,” यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे ए विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना । इसी तरह श्यामेर, आमेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी “सम्बन्ध पद” हैं ।

सम्बोधन ।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं । सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे “सम्बोधन पद” कहते हैं । जैसे ;—

आतः जन = भाई चलो ।

राम तूमि याँ = राम तुम जानो ।

गांधव भान आइ ? = माधव अच्छे हो ?

ओइ इति = ओ हरि ।

ओर चन्द्र = अरे चन्द्र ।

ऊपरके उदाहरणोंमें “भातः”, “राम”, “माधव”, “और” और “चन्द्र” सम्बोधन पद हैं ।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे ऐ, उ, अयि, श, अरे, प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं । लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते ।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वच रूपान्तर होता है ; बहुवचन में नहीं होता ।

जैसे ;—

| शब्द | सम्बोधन पद |
|----------|--------------|
| शकुन्तला | अयि शकुन्तले |
| दुर्मति | रे दुर्मते |
| सखि | हे सखे |
| प्रेयसी | हा प्रेयसि |
| शिशु | हे शिशो |
| वधू | हा वधु |
| मातृ | हा मातः |
| राजा | हे राजन् |

| शब्द | सम्बोधन पद |
|---------|-------------|
| भगवान् | हे भगवन् |
| ज्ञानी | हे ज्ञानिन् |
| मतिमान् | हे मतिमन् |

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्रायः बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं ; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं । जैसे ; हे पिता, हे दुर्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि ; लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है ।

“शकुन्तला” शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर “आ” है । आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा । जैसे ;—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि ।

“दुर्मति” शब्द इकारान्त है यानी दुर्मति शब्दका अन्तिम अक्षर “इ” है । इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में “दुर्मतिके” समान होंगे । जैसे ;—हे दुर्मते, हे कवे ।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप “प्रेयसि” ; उकारान्त शब्दोंके रूप “शिशो” ; ऊकारान्त शब्दोंके रूप

“वधु” ; ऋकारान्त शब्दोंके रूप “मातः” ; नकारान्त रूप “राजन्” की तरह होंगे ।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय ।

जहाँ बिना, वाजिरके, वाजौत, ऐ, भिन्न इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद के अनुरूप होता है । जैसे ;—

धन बिना सुख श्य ना ।

धन बिना सुख नहीं होता ।

ताँशाके भिन्न काँज इहेवे ना ।

उसके सिवाय और से काम न होगा ।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, प शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के “के” लगाना होता है । जैसे ;—

मूर्खके धिक्

मूर्खको धिक्कार ।

ताँशाके नमस्कार

तुमको नमस्कार

जिन शब्दों के साथ महित, प्रति, समान, तुना, समान, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन श साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध विभक्तियाँ लगती हैं । जैसे ;—

ताँशात्र महित ।

साँकोत्र उपत्रि ।

ताहार सञ्चे ।

रामेर तुला ।

आमार प्रति ।

तोमार समान ।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी “सम्बन्ध” की विभक्ति लगती है । जैसे ;—

पर्वतेर प्रधान हिमालय ।

कविर श्रेष्ठ कालिदास ।

धान्निकेर शिरोमणि नल ।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको “निर्धार” कहते हैं । जैसे ;—

राम अपेक्षा शाम सुशील ।

तेल अपेक्षा दूत ভাল ।

इन दोनों वाक्योंमें “राम” और “तेल” निर्धार पद हैं ।

शब्दरूप ।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं । अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं ।

पुंलिंग ‘मानव’ शब्द ।

कारक

एकवचन

बहुवचन

कर्त्ता

मानव

मानवেরা

मनुष्य, मनुष्यज

মনুষ্য, মনুষ্যজ

| | | |
|-----------|--------------------|--------------------|
| कारक | एकवचन | बहुवचन |
| कर्म | मानवके | मानवदिगके |
| | मनुष्यको | मनुष्योंको |
| करण | मानव द्वारा | मानवदिगद्वारा |
| | मनुष्यसे | मनुष्योंसे |
| सम्प्रदान | मानवके | मानवदिगके |
| | मनुष्यको, के, लिये | मनुष्योंको, के, लि |
| अपादान | मानव इहेते | मानव मकल इहेते |
| | मनुष्य से | मनुष्यों से |
| अधिकरण | मानव | मानव मकल |
| | मनुष्यमें, पर | मनुष्योंमें, पर |
| सम्बन्ध | मानव | मानवदिगद्वारा |
| | मनुष्यका, के, की | मनुष्यों का, के, |
| सम्बोधन | हे मानव | हे मानवद्वारा |
| | हे मनुष्य | हे मनुष्यों |

फल शब्द ।

| | | |
|---------|-----------|--------|
| कारक | एकवचन | बहुवचन |
| कर्त्ता | फल | फल मकल |
| कर्म | फल | फल मकल |
| करण | फल द्वारा | फल मकल |

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्रायः ऊपर की तरह ही होते हैं । जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है । अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं ।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं ;—

| संस्कृत | बँगला | संस्कृत | बँगला |
|---------|----------|-----------|------------|
| मथि | मथा | धनिन् | धनी |
| पितृ | पिता | तेजस् | तेज |
| वृक्ष | वृक् | फलतस् | फलत |
| वणिज् | वणिक् | विद्वस् | विद्वान् |
| महत् | महान् | राजन् | राजा |
| पापौरस | पापौरान् | दिश | दिक् |
| मनस् | मन | वशस् | वश |
| गुणवत् | गुणवान् | बुद्धिमत् | बुद्धिमान् |
| उपानह | उपानत् | ज्योतिस् | ज्योति |
| प्रेमन् | प्रेम | पथिन् | पथ |
| वेधस् | वेधाः | | |

विशेषण ।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व प्रकाशित हो, उसे “विशेषण” या गुणवाचक शब्द कहते जैसे—

मीठल जल = ठण्डा पानी ।

मिठे फल = मीठा फल ।

उत्तम बालक = अच्छा बालक ।

बृक्ष अश्व = बूढ़ा घोड़ा ।

मनोहर पुष्प = मनोहर फूल ।

पुर्वतन वृक्ष = पुराना पेड़ ।

लोहित वसन = लाल कपड़ा ।

म९ लोक = भला आदमी ।

बड़ गाँह = बड़ा पेड़ ।

छोट छेले = छोटा लड़का ।

अलस बालक = सुस्त बालक ।

ग्रीष्म आग = प्रकाश आग ।

शुष्क भूमि = सूखी धरती ।

गरम दूध = गरम दूध ।

काल पत्थर = काला पत्थर ।

विशुद्ध वायु = शुद्ध हवा ।

इस जगह “शीतल” शब्द विशेषण है । क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है । इसी भाँति मिष्ट, वृद्ध प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं । जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं ।

कारक, बचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता । क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते । केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है । जैसे ; नवीना ब्रह्मणी, गुणवती भार्याके, विद्यावती बालिकाएँ ।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं । जैसे ; अत्यन्त कठिन, बड़ा गन्ध, अति सुखाद् इत्यादि ।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं । जैसे ; शीघ्र निशियाछे, गन्ध गन्ध बरिडेछे ।

सर्व्वनाम ।

—*—

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका जिक्र बारम्बार करना होता है ; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका जिक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका कायदा है । इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको “सर्व्वनाम” कहते हैं ।

राम वने गेलैन, ताँहार शोक राजा गरिलैन ।

रामके वन जाने पर, उनके शोकमें राजा मर गये ।

इस जगह “राम” इस पदकी जगह ‘ताँहार’ पद है ; अतएव “ताँहार” पद सर्वनाम है ।

जिस पदकी जगह सर्वनाम इस्तेमाल किया जात उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्वनामका भी लिङ्ग और वचन होता है ; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुं के भेदसे सर्वनाम में भेद नहीं होता । जैसे ;

जोता अत्यन्त पतिव्रता, तिनि पतिके परम देवता गानितेन ।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको पर कह कर मानती थी ।

[२) अश्वगण बनिष्ठ जल्लु, ताँहावा भारी भारी व द्रुतवेगे छनिया याय ।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी तेजीसे चले जाते हैं ।

यहाँ “सीता” स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है “तिनि” यह सर्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक है । “अश्वगण” पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद लिये “ताहारा” यह सर्वनाम भी पुंलिङ्ग और पद है ।

विशेष्य पद की भाँति सर्वनाम पद के भी

और कारक होते हैं । विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है ।

सर्व्वनाम ये हैं—आमि, मूई, तूमि, तूई, आपनि, तिनि, जे, तांश, ता, यिनि, ये, यांश, इनि, ए, ईश, एई, उनि, उ, उश, के, जर्व, जव, उन्न, अन्न, इतर, अर, अपर इत्यादि ।

युस्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम् इत्यादि ; ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं । इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते । इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं । संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत, तद्धित् और समांस में व्यवहार होते हैं ।

कितने ही सर्व्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं । जैसे ;

| <u>मूलशब्द</u> | <u>चलित शब्द सम्भ्रान्तको</u> | <u>असम्भ्रान्तको</u> |
|----------------|-------------------------------|----------------------|
| अस्मद् | आमि | |
| भव | आपनि | |
| युस्मद् | तूमि | तूई |
| यद् | यांश, या, तिनि, | ये |
| तद् | तांश, ता, तिनि | जे |
| इदम् | } एह, ईश, इनि | ए |
| एतद् | | |

| | |
|------|--------------|
| अदम् | ऐ, उश, उनि |
| किम् | के, कि, कोन् |
| जर्व | जव |

व्यक्ति-योग के समय अन्य, पर, उभय, इतर प्रभृ
कितने ही शब्दों में कुछ रह बदल नहीं होता अर्थात् ये
के ऐसे ही रहते हैं ।

सर्वनाम शब्दके रूप ।

आम्रद शब्द ।

| | एकवचन | बहुवचन |
|-----------|-------------|-----------------|
| कर्त्ता | आमि | आमरा |
| | मैं, मैंने | हम, हमने |
| कर्म | आगाक | आगादिगके |
| | मुझे, मुझको | हमें, हमको |
| करण | आगा द्वारा | आगादिगेर द्वारा |
| | मुझ से | हम से |
| सम्प्रदान | आगाक | आगादिगके |
| | मुझे, मुझको | हमें, हमको |
| अपादान | आगा इहेउ | आगादिगेर इ |
| | मुझसे | हम से |

| | | |
|---------|---------------|----------------|
| अधिकरण | आमाते | आमादिगेर मध्ये |
| | सुझमें, सुझपर | हममें, हम पर |
| सम्बन्ध | आमार | आमादिगेर |
| | मेरा | हमारा |

“ये” शब्द पुं० व स्त्री०

| | | |
|---------|-------------|----------------|
| | एकवचन | बहुवचन |
| कर्त्ता | ये | याहारा |
| | जिसने | जिन्होंने |
| कर्म | याहाके | याहादिगके |
| | जिसे, जिसको | जिन्हें, जिनको |
| | | इत्यादि । |

“से” शब्द पुं० व स्त्री०

| | | |
|---------|----------|--------------|
| कर्त्ता | से | ताहारा |
| | वह, उसने | वै, उन्होंने |
| कर्म | ताहाके | ताहादिगके |
| | उसको | उनको |

आदर प्रकाशनार्थ “ये” के स्थानमें “यिनि” ; “याहारा” के स्थानमें “याहारा” ; से के स्थानमें “तिनि” ; “ताहारा” के स्थानमें “ताहारा” इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं ।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं । सर्व्वनाममें “सम्बोधन” नहीं होता केवल सात कारक होते हैं ।

अव्यय ।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक-भेद जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और वचन न उसको “अव्यय” कहते हैं ।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकार होते हैं । संयोजक अव्यय ये हैं—एवं, ओ, आर, अ, अपिच, किञ्च, अथच, यदि, यद्यपि, योहेतु, येन, वरन्, सूत केनना, काजे, काजेर इत्यादि ।

वियोजक अव्यय ये हैं—वा, किंवा, अथवा, नतुवा, तथापि, तथाच,ना हय, नय त, नहिले, नचे, अग्रथा इत्यादि

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—आः, शय, हा, उह, छिछि, राम राम, हरि हरि इत्यादि ।

प्र, परा, अय, सम्, अय, अनु, निर, दुर, वि, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ, एह, इ, इन्हें सर्ग” कहते हैं ।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया-वाचक पदके पहले लगते हैं तब वह क्रिया-वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश है । जैसे ;

दान = देना

आदान = लेना

गमन = जाना

आगमन = आना

अपकार = बुराई

उपकार = भ

क्रिया प्रकरण ।

होना, करना प्रभृतिको “क्रिया” कहते हैं । जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको “क्रिया पद” कहते हैं । जैसे ; इष्टेतेष्टे, कृष्टेतेष्टे इत्यादि ।

भू, कृ, दृश्य, गम प्रभृतिको धातु कहते हैं । ये ही क्रिया की मूल होती हैं ।

क्रिया दो तरह की होती हैं :—

(१) सकर्मक ।

(२) अकर्मक ।

जिन क्रियाओं के कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएँ, अर्थात् इष्टा, याँष्टा, वृष्टा, थाका, पड़ा, जागा, मरा, बोँठा, शंजा, नाँठा, थेला, कौंदा, कौंथा प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्मक होती हैं ; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते । जैसे ; इष्टि इष्टेतेष्टे, कृष्टि कृष्टेतेष्टे इत्यादि । यहाँ हइतेछे, मगियाछे, ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं ; इसवास्ते ये अकर्मक हैं ।

जिन क्रियाओं के कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात् थाँष्टा, देखा, प्राँठे करा प्रभृति धातुओंकी क्रिया सकर्मक होती हैं ; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म होते हैं । जैसे ;

ईश्वर सकल करितेछैन ।

ईश्वर सब करता है ।

से पुस्तक पढ़ितेछे ।

वह पुस्तक पढ़ता है ।

राम अन्न भक्षण कबिन ।

रामने अन्न खाया ।

द्विकर्मक क्रिया ।

बना, लेखा, जिज्ञासा, देखान, बुनान प्रभृति क्रियाओंके दो कर्म होते हैं । इसी कारणसे इनको द्विकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे ;

राम ब्रजके तोगार कथा बलियाछे ।

रामने ब्रजकी तुम्हारी बात बोल दी है ।

आमि आज ताँहाके से विषय जिज्ञासा कबिर ।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँ गा ।

ललित शवत्के पाखी देखाइतेछैन ।

ललित शरत्की पक्षी दिखाता है ।

पहिले उदाहरणमें “ब्रजके” और “कथा” ये दो कर्म “बलियाछे” क्रियाके हैं । दूसरे में “ताँहाके” और “विषय” ये दो क “जिज्ञासा” क्रियाके हैं । तीसरे में “शरत्के” और “पाखी” दो कर्म “देखाइतेछैन” क्रिया के हैं ।

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे “काल” कहते हैं ।

काल तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वर्त्तमान ।

(२) अतीत ।

(३) भविष्यत् ।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य अभी हो रहा है । जैसे ; शिशु खेलितेछे । यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है । ऐसी दशामें ‘खेलितेछे’ इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं । यही प्रकृत वर्त्तमान काल है ।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है । अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं । अपेक्षाकृत पूर्व पूर्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमशः “अद्यतन” “अनद्यतन” और “परोक्ष” कहते हैं । जैसे ; शिशु खेलिन, शिशु खेलित, शिशु खेलिसाछिन ।

भविष्यत् काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है । जैसे ; शिशु खेलिबे ।

विधि, अनुज्ञा, सम्भावना प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं ।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

की जाती है उसे “विधि” कहते हैं । ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता । जैसे ;

গুরুজনকে ভক্তি করিও ।

गुरु जन में भक्ति रक्खो ।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको “अनुज्ञा” कहते हैं । जैसे ;

সে দেখুক = उसे देखने दो ।

তুগি যাও = तुम जाओ ।

বাড়ী যাও = घर जाओ ।

চুবি করিও না = चोरी मत करना ।

কার্যে গায় ব্যবহার করিও ।

काम में न्याय से काम लो ।

প্রতিবাসীকে আশ্রয় প্রীতি কর ।

पड़ोसी से अपने समान प्रीति कर ।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন ।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़ने को दीजिये ।

यह होनेसे यह हो सकेगा, इस तरह के ज्ञान को “सम्भावना” कहते हैं । जैसे ;

সে পাইতে পারে = वह पा सकता है ।

তিনি যাইতে পারেন = वह जा सकते हैं ।

আমি দিতে পারি = मैं दे सकता हूँ ।

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा;
ऐसे पद विन्यास को ‘धातुरूप’ कहते हैं ।

वर्तमान काल ।

इत्था धातु ।

उत्तम पुरुष
इत्तेछि

मध्यम पुरुष
इत्तेछ

प्रथम पुरुष
इत्तेछे

अतीत काल ।

उत्तम पुरुष
इत्तेनाम
इत्तेनाछि
इत्तेनाछिलाम

मध्यम पुरुष
इत्तेले
इत्तेनाछ
इत्तेनाछिले

प्रथम पुरुष
इत्तेल
इत्तेनाछे
इत्तेनाछिल

भविष्यत् काल ।

उत्तम पुरुष
इत्तेव

मध्यम पुरुष
इत्तेवे

प्रथम पुरुष
इत्तेवे

वर्तमान काल ।

करा धातु ।

उत्तम पुरुष
करितेछि

मध्यम पुरुष
करितेछ

प्रथम पुरुष
करितेछे

अतीत काल ।

| | | |
|-------------|-------------|-------------|
| उत्तम पुरुष | मध्यम पुरुष | प्रथम पुरुष |
| करिनाम | करिने | करिन |
| करियाछि | करियाछ | करियाछे |
| करियाछिनाम | करियाछिने | करियाछिन |

त्रियाओंके रूप समझने में कुछ कठिनता पड़ती है इस लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं ।

सामान्य भूतकाल ।

(Past Indefinite Tense.)

| | एक वचन | बहुवचन |
|----------|---------------|-----------------|
| उ० पु० | आमि गियाछिनाम | आमरा गियाछिनाम |
| | मैं गया | हम गये |
| म० पु० | तूअ गियाछिने | तोअमरा गियाछिने |
| | तुम गये | तुम लोग गये |
| प्र० पु० | जे गियाछिन | ताहारा गियाछिन |
| | वह गया | वे गये |

आसन्न भूतकाल ।

(Present Perfect Tense.)

एक वचन

बहुवचन

उ० पु०

आमि गियाछि

आमरा गियाछि

मैं गया हूँ

हम गये हैं

म० पु०

तुमि गियाछ

तौमरा गियाछ

तुम गये हो

तुम लोग गये हो

प्र० पु०

से गियाछे

ताहारा गियाछे

वह गया है

वे गये हैं

भविष्यत् काल ।

(Future Indefinite.)

एक वचन

बहुवचन

उ० पु०

आमि याईव

आमरा याईव

मैं जाऊँगा

हम जायँगे

म० पु०

तुमि याईवे

तौमरा याईवे

तुम जाओगी

तुम लोग जाओगी

प्र० पु०

से याईवे

ताहारा याईवे

वह जायगा

वे जायँगे

कभी कभी सकर्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता । उस समय सकर्मक क्रिया अकर्मक की तरह काम करती है । जैसे ;

आगि देखिनाग = मैंने देखा ।

तिनि लयेन नाई = उन्होंने नहीं लिया ।

यहाँ “देखा” और “लया” क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्मपद के न होनेसे, वे अकर्मक के समान हो गयी हैं ।

वचन-भेद से क्रियाके रूप में फर्क नहीं होता । जैसे ;

आगि करितेछि = मैं करता हूँ ।

आमरा करितेछि = हम लोग करते हैं ।

इस जगह दोनों वचनों में ही एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है । लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है । हिन्दीमें वचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है । जैसे ; मैं करता हूँ और हम करते हैं । बँगला में “आमि” एक वचनके लिये “करितेछि” और “आमरा” बहुवचनके लिये भी “करितेछि” एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है । लेकिन हिन्दीमें “मैं” के लिये “करता हूँ” और “हम” के लिये “करते हैं” भिन्न भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है ।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है ।

“आमि” इस पद की क्रिया की उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

हैं । “तुम” इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं । इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं । जैसे ;—

आमि करितेछि = मैं करता हूँ ।

तूमि करितेछ = तुम करते हो ।

जे करितेछे = वह करता है ।

“आमि” उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है । “तूमि” मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यम पुरुष है । “जे” प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथम पुरुष है ।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें “न” और लगा दिया जाता है । जैसे ;—

(१) तिनि करियाछेन = उन्होंने किया ।

(२) जे करियाछे = उसने किया ।

पहले उदाहरण में “तिनि” प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया “करियाछे” में “न” जोड़ दिया गया है ; किन्तु “जे” प्रथम पुरुष और साधारण मनुष्य है इससे उसकी क्रियामें “न” नहीं जोड़ा गया है ।

कृदन्त ।

जिस क्रियाके द्वारा वाक्य की समाप्ति न हो, वाक्य की

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया को दरकार पड़े, उसको “असमापिका क्रिया” कहते हैं। जैसे ; बलिशा, करिउते, याईउते इत्यादि ।

जिस जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें “ले” जोड़ना पड़ता है । जैसे—

तिनि बलिले आगि राईव ।

उनके बोलनेसे जाजँगा ।

इसी तरह करिले, दिले इत्यादि समझो ।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे “ते” जोड़ा जाता है । जैसे ;

दिउते = दिवार निमित्त = देनेके लिये ।

याईते = याईवाव निमित्त = जानिके वास्ते ।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद “रा” जोड़ा जाता है । जैसे ;

याईरा = गगनानन्तर = जाकर ।

दिश्रा = दानानन्तर = देकर ।

शुईश्रा = शयनानन्तर = सोकर इत्यादि ।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है तब उसके बाद “ज”, “उरा” इनमें से एकको जोड़ना होता है । जैसे ;

बना वा बलिवा = बोलना ।

करा वा करिवा = करना ।

याउरा वा याईवा = जाना ।

धातुके उत्तर कुछ प्रत्यय लगाकर शब्द बना सकते हैं ।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम “कृत” और निष्पन्न पदोंका नाम “कृदन्त” है।

धातुके उत्तर “अन” और “ति” प्रत्यय होते हैं। “अन” और “ति” प्रत्ययान्त पद प्रायः ही क्रिया-वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें “ति” होती है ये स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

| धातु | प्रत्यय | पद | अर्थ |
|------|---------|------------------|---------------------|
| ख | अन, ति | खवन, खति | खवन करा |
| स्त | अन, ति | स्तवन, स्तुति | स्तवन करनेका काम |
| क | अन, ति | कवन, कृति | करा |
| कृ | अन, ति | करण, कृति | करना, काम |
| गम | अन, ति | गगन, गति | यात्रा |
| गम | अन, ति | गमन, गति | जानेका काम |
| गन | अन, ति | गनन, गति | गाना |
| मन | अन, ति | मनना, मति | मानना, मति |
| दर्श | अन, ति | दर्शन, दृष्टि | — देखा |
| दृश | अन, ति | दर्शन, दृष्टि | देखनेका काम |
| श्रज | अन, ति | मर्ज्जन, श्रष्टि | प्रशुद्ध करा |
| सृज | अन, ति | सर्जन, सृष्टि | प्रस्तुत करनेका काम |
| वच | अन, ति | वचन, उक्ति | बना |
| वच | अन, ति | वचन, उक्ति | बोलनेका काम |

धातुके उत्तर कर्म वाच्य और अतीत कालमें “त” प्रत्यय

होता है । जिनके अन्तमें “त” प्रत्यय होता है वे पद प्रायः ही कर्मके विशेषण होते हैं । जैसे ;

| धातु | प्रत्यय | पद | अर्थ |
|---------|---------|-----------|-------------------|
| कृ | त (कृ) | कृत | जो किया गया है । |
| श्रु | त | श्रुत | जो सुना गया है । |
| वि + रु | त | विस्तीर्ण | जो व्याप्त है । |
| भक्ष | त | भक्षित | जो खाया गया है । |
| वृक्ष | त | वृक्ष | जो कहा गया है । |
| बुझ | त | बुझ | जो जोड़ा गया है । |
| द | त | दत्त | जो दिया गया है । |
| गै | त | गीत | जो गाया गया है । |
| ज्वा | त | ज्वात | जो जाना गया है । |
| बन्ध | त | बन्ध | जो बाँधा गया है । |
| भज | त | भज | जो भजा गया है । |
| पा | त | पात | जो पिया गया है । |
| वि + ध | त | विहित | जो किया गया है । |
| भूज | त | भूज | जो खाया गया है । |
| छिद | त | छिन्न | जो काटा गया है । |

धातुके उत्तर “ता” (हन्), “ई” (णिन्) “अक” (णक), “अन” प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं । जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं ।

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य अतीत कालमें “त” (त) लगाया जाता है । जैसे ;

| धातु | प्रत्यय | पद | अर्थ |
|-------|-----------|---------|-----------------|
| दा | ता (तृण) | दाता | जो दे । |
| श्र | ता | श्रोता | जो सुने । |
| जि | ता | जेता | जो जय करे । |
| कृ | ता | कर्ता | जो करे । |
| वच् | ता | वक्ता | जो बोले । |
| भुज् | ता | भोक्ता | जो खाये । |
| ग्रह | ता | ग्रहीता | जो ग्रहण करे । |
| श्च | ता | श्चर्का | जो रचे । |
| श्वा | ई (गिन) | श्वारी | जो स्थिर रहे । |
| भू | ई | भावी | जो हो । |
| दा | ई | दायी | जो दान करे । |
| युज् | ई | योगी | जो योग करे । |
| जि | ई | जयी | जो जय करे । |
| कृ | अक | कारक | जो करे । |
| भज् | अक | भाजक | जो भाग करे । |
| युज् | अक | योजक | जो योग करे । |
| निन्द | अक | निन्दक | जो निन्दा करे । |
| पाठ | अक | पाठक | जो पढ़े । |
| पाच | अक | पाचक | जो पाक करे । |

| धातु | प्रत्यय | शब्द | अर्थ |
|------|---------|----------|----------------|
| ग्रह | अक | ग्राहक | जो ग्रहण करे । |
| गै | अक | गायक | जो गान करे । |
| हन | अक | घातक | जो मारे । |
| दृश | अक | दर्शक | जो देखे । |
| नृत् | अक | नर्तक | जो नाचे । |
| दा | अक | दायक | जो दान करे । |
| शी | अक | शायक | जो सोवे । |
| रुध् | अक | रोधक | जो रोध करे । |
| स्तु | अक | स्तावक | जो स्तव करे । |
| हु | अक | भावक | जो हो । |
| हर | अक | हारक | जो हरण करे । |
| छिद् | अक | छेदक | जो काटे । |
| गम | त (ल) | गत | जो बीत गया । |
| श्रम | त | श्रांस्त | थका हुआ । |
| जन | त | जात | पैदा हुआ । |
| भू | त | भूत | जो हुआ है । |
| भिद | त | भिन्न | कोड़ा हुआ । |
| मद | त | मत्त | मतवाला । |
| मृ | त | मृत | जो मर गया । |

धातुके उत्तर “तव्य”, “अनीय” और “य” प्रत्यय है । जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धर्म कारक के विशेषण होते हैं और भविष्यत् का अर्थ प्रकाश करते हैं । जैसे;

| ધાતુ | પ્રત્યય | પદ | અર્થ |
|-------|---------------|-------------------------------|----------------------------|
| જા | ત્વા, અનીય, ય | શ્રોત્વા, શ્રવણીય, શ્રવ્ય | યાશ સુના યાય । |
| સુ | ત્વ, અનીય, ય | ઓત્વ, અવશીય, અવ્ય | જો સુના જાય । |
| ગ્રાહ | ત્વા, અનીય, ય | ગ્રાહીત્વા, ગ્રાહણીય, ગ્રાહ્ય | યાશ લાગુ યાય । |
| ગ્રહ | ત્વ, અનીય, ય | ગ્રહીત્વ, ગ્રહણીય, ગ્રાહ્ય | જો લિયા જાય । |
| ગમ | ત્વા, અનીય, ય | ગમ્ત્વા, ગમનીય, ગમ્ય | ચેથાને યાગુ યાય । |
| ગમ | ત્વ, અનીય, ય | ગમ્ત્વ, ગમનીય, ગમ્ય | જાને યોગ્ય, જહો જાયા જાય । |
| હૂજ | ત્વા, અનીય, ય | હોજીત્વા, હોજનીય, હોજ્ય | યાશ થાગુ યાય । |
| મુજ | ત્વ, અનીય, ય | મોક્ત્વ, મોજનીય, મોજ્ય | જો યાયા જાય, યાને યોગ્ય । |
| કૃ | ત્વા, અનીય, ય | કર્ત્ત્વા, કર્મણીય, કર્મ્ય | યાશ કરા યાય । |
| ક્ષ | ત્વ, અનીય, ય | ક્ષત્ત્વ, કર્મણીય, કર્મ્ય | જો કરા જાય, કરને યોગ્ય । |
| પા | ત્વા, અનીય, ય | પાત્ત્વા, પાનીય, પેય | યાશ પાન કરા યાય । |
| પા | ત્વ, અનીય, ય | પાત્ત્વ, પાનીય, પેય | જો પિયા જાય, પીને યોગ્ય । |

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :-

| | | | |
|---------|-----------|-------------|-----------|
| द्वितीय | दूसरा | उनविंशतितम | उन्नीसवाँ |
| तृतीय | तीसरा | विंश | बीसवाँ |
| चतुर्थ | चौथा | एकविंश | इक्कीसवाँ |
| पঞ্চम | पाँचवाँ | एकविंशतितम | इक्कीसवाँ |
| षष्ठ | छठा | षष्टितम | साठवाँ |
| सप्तम | सातवाँ | सप्ततितम | सत्तरवाँ |
| अष्टम | आठवाँ | अशीतितम | अस्सीवाँ |
| नवम | नवाँ | नवतितम | नव्वेवाँ |
| दशम | दशवाँ | शततम | सौवाँ |
| एकादश | ग्यारहवाँ | पक्षषष्टितम | पैंसठवाँ |
| द्वादश | बारहवाँ | | |
| त्रयोदश | तेरहवाँ | | |

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये “तर” “तम” “इष्ठ” और “ईयस्” प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ;

| शब्द | तर | तम | इष्ठ | ईयस् |
|---------|-----------|-----------|----------|-----------|
| गुरु | गुरुतर | गुरुतम | गरिष्ठ | गरीयान् |
| अन्न | अन्नतर | अन्नतम | अन्निष्ठ | अन्नीयान् |
| प्रशस्त | प्रशस्ततर | प्रशस्ततम | श्रेष्ठ | श्रेयान् |
| वृक्ष | वृक्षतर | वृक्षतम | वर्षिष्ठ | वर्षियान् |

शब्दके बाद तुल्यार्थ प्रगट करनेके लिये “वत्” और “कल्प” लगाते हैं। जैसे;

जनव९

जलके समान

गुरुव९

गुरुके समान

अध्यापककक्ष

अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में “धा” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे, द्विधा, तृधा, शतधा, इत्यादि ।

स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे “मय” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ; शर्नमय, भृशमय, कर्लमय, इत्यादि ।

सर्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में “दा” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ; सर्वदा, एकदा, इत्यादि ।

सर्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में “त” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ; सर्वत, अणुत, एकत इत्यादि ।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें “तन” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ; पूर्वतन, अधूनतन इत्यादि ।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में “टि” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ; किक्किटि, कदाटि इत्यादि ।

समास ।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चिन्हों को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को “समास” कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है उसे “सामासिक” शब्द कहते हैं । जैसे ; कन ७ गूल—इन

दो पृथक् पदोंको “कन गूल” इस तरह एक पद बना कर भी काम में ला सकते हैं । अग्नि, जल ७ वायू—इन तीनोंको एक पद बना कर “अग्नि जल वायू” इस तरह प्रयोग कर सकते हैं । ‘राजा ७ बाँगी’ इन दोनों पदों को “राजबाँगी” इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते हैं । कई शब्दोंको मिला कर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं ।

समास पाँच प्रकार की होती हैं—इन्द्र, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव ।

हिन्दीमें समास ७ प्रकार की मानी हैं । उसमें इन सिवाय “द्विगु” समास और मानी है ।

इन्द्र ।

इन्द्र वह है जिसमें कई पदोंके बीच “और” (७) लोप करके एक पद बना लिया जाय । जैसे ;

कन ७ फूल = कनफूल

राजा ७ रानी = राजारानी

माँ ७ पिता = माँपिता

राम ७ लक्ष्मण = रामलक्ष्मण

तत्पुरुष ।

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिस में पहला पद कारक को छोड़ दूसरे किसी भी कारक के चिन्ह सहित और इसी पदका अर्थ प्रधान हो ।

कर्मपद के साथ जो समास होती है उसे द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं । जैसे ;

विश्वयत्के आपन्न = विश्वयापन्न ।

परलोकके प्राप्ता = परलोक प्राप्ता ।

करण पदके साथ जो समास होती है उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं । जैसे ;

शोक द्वारा आकुल = शोकाकुल ।

मोह द्वारा अन्ध = मोहान्ध ।

आत्मा द्वारा कृत = आत्मकृत ।

अपादान पदके साथ जो समास होती है उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं । जैसे ;

पाप इहेते मुक्त = पापमुक्त ।

ब्रह्म इहेते उ०पन्न = ब्रह्मो०पन्न ।

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होती है उसे षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं । जैसे ;

विश्वेव पिता = विश्वपिता ।

चन्द्रेन दर्शन = चन्द्रदर्शन ।

राजावे पूत्र = राजपूत्र ।

अधिकरण पद के साथ जो समास होती है उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं । जैसे ;

गृहे वास = गृहवास ।

इच्छु स्थित = इच्छुस्थित ।

शर्ग गत = शर्गगत ।

हीन, जन प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से द्वीतितत्पुरुष समास होती है । जैसे :

ज्ञान द्वारा शीन = ज्ञानशीन ।

विद्या द्वारा शूण्य = विद्याशूण्य ।

कर्मधारय ।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं ।

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun) का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है । जैसे :

शत्रु + आत्मा = शत्रुआत्मा ।

महाराज + राज = महाराज ।

शत्रु + शत्रु = शत्रुशत्रु ।

महाराज + कर्म = महाराजकर्म ।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदों में समास हुई है परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है । विशेषण पद पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने रूपसे प्रकाश पाया है ; बस, इसी कारण से इसे “कर्मधारय” समास कहते हैं ।

बहुव्रीहि ।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो । इस की परिभाषा इस भाँति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं ।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं ; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं । जैसे ; क्षीण-काश, यहाँ क्षीण और काश इन दो पदों में समास हुई, है । क्षीण विशेषण और काश विशेष्य है ; किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक् पृथक् भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है ; अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई ।

क्षीणकाय, इस पदसे यदि कुश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी ; क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है ।

छक्रपाणि, यहाँ भी छक्र पद विशेष्य है । उसका अर्थ

चाका या पहिया है ; पाणि पद भी विशेष है उसका अर्थ हाथ है । इन दोनों की समास होने से चक्रपाणि यह एक पद हुआ । इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है । अतएव यह बहुव्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष पद है ।

इस समास में बार, याति, या, श्रा इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं । ये या शा प्रायः व्यवहृत नहीं होते । जैसे ;

पीत अम्बर बार, से पीताम्बर अर्थात् कृष्ण ।

बृहत् काय बाब, से बृहत्काय ।

जित इन्द्रिय बाहा कर्तृक, से जितेन्द्रिय ।

स्वच्छ तोर आछे जाते, से स्वच्छतोर ।

पाणिते चक्र बार, से चक्रपाणि ।

नक्त मति बाब, से नक्तमति ।

महत् आशय बार, से महाशय ।

न अन्त बार, से अनन्त ।

न आदि बाब, से अनादि ।

नोट (१) बहुव्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे “महत्” की जगह “महा” हो जाता है । जैसे ;

महत् बल बार, से महाबल ।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुलिङ्ग की भाँति हो जाता है । जैसे ;

दीर्घा यष्टि = दीर्घ यष्टि ।

स्थिरा गति = स्थिर गति ।

यहाँ “यष्टि” शब्द स्त्रीलिङ्ग है और “दीर्घा” उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है ; किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुलिङ्ग की भाँति “दीर्घ” हो गया । इसी भाँति “स्थिरा” का “स्थिर” हो गया ।

(३) समास में “न” इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से “न” के स्थान में “अन” हो जाता है लेकिन “न” के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे “न” के स्थानमें “अ” हो जाता है । जैसे ;

न + अनु = अननु ।

न + आदि = अनादि ।

न + छान = अछान ।

न + मंशान = अमंशान ।

यहाँ “न” के बाद “अ” स्वर आ गया ; इससे “न” के स्थान में “अन” लगाया गया ; इसी भाँति तीसरे उदाहरण में “न” के बाद “ज्ञा” व्यञ्जन आ गया ; इस लिये “न” के स्थानमें “अ” लगाया गया ।

(४) बहुव्रीहि समासमें परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है । जैसे ;

वाक्य-रचना ।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है, उसे “वाक्य” कहते हैं । जैसे ;

- (१) अश्वर सकल करितेछेन ।
- (२) बायू बहितेछे ।
- (३) हरि पुस्तक पड़ितेछे ।
- (४) ब्रष्टि इहतेछे ।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं, उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको “वाक्यरचना” कहते हैं ।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है । जैसे ;

ब्रष्टि पड़ितेछे ।

प्रभात इहेन ।

सूर्य उदय इहेराछे ।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया पद भी उसी पुरुष का होता है, बचन-भेद से क्रिया के रूप में भे नहीं होता । जैसे ;

- (१) { आगि याइतेछि
आमरा याइतेछि

(২) { তুমি যাইতেছ
তোমরা যাইতেছ

(৩) { সে যাইতেছে
তাহারা যাইতেছে

পছলি উদাহরণে “আমি” একবচন আর “আমরা” বহুবচন হৈ; কিন্তু
দীনাঁকী ক্রিয়া এক হী হৈ । দূসরে মৈ “তুমি” একবচন আর “তোমরা” বহুবচন
হৈ; লেকিন দীনাঁকী ক্রিয়া এক হী হৈ । “আমি” আর “আমরা” উত্তম পুরুষ হৈ ।
ইনকী ক্রিয়া “জাইতেছ” হৈ আর “তুমি” আর “তোমরা” মধ্যম পুরুষ হৈ । ইনকী
ক্রিয়া “জাইতেছ” হৈ । পুরুষকী আর হাঁনেসী ক্রিয়া মৌ বদল গযী ।

নোট (২) জিস বাক্যমৈ উত্তম আর মধ্যম পুরুষ কিংবা
প্রথম আর উত্তম পুরুষ অথবা প্রথম, মধ্যম আর উত্তম
পুরুষ এক ক্রিয়া কী কর্ত্তা হাঁ, উস বাক্যমৈ উত্তম পুরুষ কী
ক্রিয়া হী ব্যবহৃত হোগী । জৈসে ;

আমি ও তুমি দেখিতেছিলাম ।

তোমাতে ও আমাতে বসিব ।

হরি ও আমি সেখানে যাইব ।

আমি, তুমি ও হরি ইহা পড়িয়াছিলাম ।

নোট (৩) জহাঁ প্রথম আর মধ্যম পুরুষ এক ক্রিয়া কী
কর্ত্তা হাঁ, বহাঁ মধ্যম পুরুষ কী হী ক্রিয়া প্রয়োগ করনী
হোগী । জৈসে ;

তুমি ও হরি সেখানে ছিলে ।

তাহারা ও তোমরা ইহা দেখিয়াছিলে ।

তাহাতে ও তোমাতে একত্র থাইয়াছ ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्तृपद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये । आगि ও তোমরা যাইবে, আগি ও তাহার। দেখিতেছি, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते । अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी ।

क्रिया के सकर्मक या द्विकर्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्मपद बैठेगा । जैसे ;

आगि हरिके देखिलाम ।

ताशारा पूछक पड़ितेछ ।

बपू ताशारक पूछक दान करियाछे ।

पहले उदाहरणमें “हरिके” यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया “देखिलाम” के पहिले बैठा है । दूसरेमें पुलक कर्मपद है और वह क्रिया पड़ितेछ के पहिले बैठा है । इसी तरह तीसरेमें “ताशारक” और “पूछक” ये दो कर्मपद हैं और वे दोनों ही अपनी क्रिया “दान करियाछे” के पहले बैठे हैं ।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी ; असमापिका और समापिका क्रियाका कर्ता एक होगा और इन दोनों क्रियाओंके कर्म करण विशेषण प्रभृति पद इन दोनों क्रियाओं के पहले बैठेंगे । जैसे ;

हरि पूछक नईया पड़िते नागिन ।

शमी अर्थात्ने वेद पड़िते आनितेछ ।

तिनि गृह इहते बहिर्गत इहया श्रुतमने विद्यानये

आवेश करिलेन ।

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है । जैसे ;

सुशीला बालिका ।

बुद्धिमान बालक ।

बलदानी वृद्ध ।

पहले उदाहरण में “सुशीला” विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य “बालिका” के पहले बैठा है । इसी भाँति और उदाहरण समझ लो ।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदों के बीचमें संयोजक (जोड़ने-वाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये । जैसे ;

महाभाग शशिधर वाम ।

जयवादी शर्माजी राजा बुद्धिमान ।

यहाँ “व्यास” शब्दके “महामान्य” और “ऋषिभूषण” दो विशेषण हैं । लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में “और” या “व” इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये । उसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो ।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बैठता है ; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है । जैसे ;

तिनि अत्यन्त वेगे गगन करिलेन ।

राग उठैःश्वरे श्विके डाकिन ।

पहले उदाहरण में “गगन करिलेन” क्रिया है और “अत्यन्त वेगे” उसका विशेषण है और वह कायदे के साफ़िक अपनी क्रिया के पहले बैठा है । दूसरे में

“डाकिल” सकर्मक क्रिया है और “उच्चैःखरि” उसका विशेषण है। “हरिके” कर्मपद है। क्रिया विशेषण यहाँ “हरिके” कर्मपद के पहले बैठा है।

दो या दो से अधिक पद, वाक्यांश अथवा वाक्यों के एक संग प्रयोग करने पर इन के बीच में संयोजक अव्यय, अर्थात् एवं, ओ, किंवा, आर, बैठाने चाहिये। जैसे ;

हरि, एवं राम पढ़ितेछे।

हस्ती, अश्व, गो ओ छाग चरितेछे।

राम सर्वदा लेखे एवं पढ़े।

ऊपर के नियमानुसार, ही अथवा, किंवा, वा, वियोजक अव्यय भी व्यवहार किये जाते हैं। जैसे ;

राम अथवा हरि आसिबे।

मे पढ़िबे किंवा लिखिबे।

तूमि वा आगि करिब।

वाक्य के पहले ही सम्बोधन पद बैठता है ; उस सम्बोधन पद के ठीक पहले सम्बोधन चिन्ह हे, अहे, अरे प्रभु अव्यय बैठाये जाते हैं। कभी कभी इनके न बैठानेसे भी काम चल जाता है। जैसे ;

हे जगदीश, तूमिह सकनेर कर्ता।

ओहे महेश, एखाने एस।

अरे ! तूई एखन या।

राम, तूगि आज खेला करिओना।

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध हो) बैठाया जाता है । जैसे ;

ঐশ্বর্যের মহিমা ।

छःशीर भग्न कुटीर ।

यहाँ “ईश्वर” यह सम्बन्धीपद है ; क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है ।

करण पद कर्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है । जैसे ;

তিনি অল্প দ্বারা এই বৃক্ষটি ছেদন করিলেন ।

इरि यष्टि द्वारा वृक्ष इहेते फल पाड़िल ।

यहाँ “अल्प द्वारा” यह करण पद है, यह “तिनि” कर्तृपद के बाद और “वृक्ष” कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो ।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है । जैसे ;

তিনি কুক্ষ্ম ইহাতে বিরত ইহীরাছেন ।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है ; कभी कभी बाद भी बैठता है । जैसे ;

তাহার ইচ্ছা পূরুক আছে ।

गात्रे कोन शीतबल्ल नाई ।

वक्तव्य ।



हमने यहाँ तक बँगला व्याकरण में प्रवेश मात्र करने
 राह दिखाई है । इससे हिन्दी जाननेवालों को बँगला
 सीखने में सुगमता होगी । जिन्हें बँगला व्याकरण
 अन्यान्य विषय जानने हों, वे बृहत् बँगला व्याकरण देखें ।



हिन्दी बंगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।

अनुवाद विषय ।

पहिला पाठ ।

ছিল = था

সেখানকার = वहाँका

রাজার = राजाका

ভাঁর = उनका

তত = उतना

গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा

অথচ = और

করিতেন = करते थे

এত = इतना

হওয়া = होनेका

সেই = उसी

যত = जितने

ছিলেন = थे

সকলের চেয়ে = सबकी अपेक्षा

পণ্ডিতদের = पण्डितोंके

মধ্যে = बीचमें

হইলে = होनेपर

গীর্వాংসা = फैसला

কেও = कोई

সীতা ।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল । সেখানকার রাজাব ছিল জনক । তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়া তাঁর তত গৌরব ছিল না । সকল বড় বড় রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন । তাঁর এত হওয়ার অনেক কারণ ছিল ।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান্ ছিলেন,—সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন । সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল । পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তার মীমাংসা করিতেন । তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবাব আর কেউ ছিল না ।

সীতা ।

(১)

মিথিলা নামক एक राज्य था । वहाँ के राजा का नाम जनक था । उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणही उनकी उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी । सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे—खूब खातिर करते थे । उनका इतना मान होने के अनेक कारण थे ।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सभीकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे । सारे शास्त्र उनके करणस्थ थे । पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे । उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहने वाला और कोई नहीं था ।

दूसरा पाठ ।

তাই = वही

শুধু = केवल

কি = क्या

যেমন = जैसा

তেমন = वैसा

কোন = किसी

পড়িলে = पढ़नेसे

বড় বড় = बड़े बड़े

পরাশর = सलाह

নিতেন = लेते थे

বীরত্বও = वीरत्व भी

তাহার = उनकी

না = नहीं

করিয়া = करके

কোন = कोई

তাকে = उसकी

হটাইতে = हटाते

পারেন = सकता

নাই = नहीं

নয় = नहीं

সেকালে = उस समय

মত = अनुसार, समान

যখন = जब

বসিতেন = बैठते थे

পরিতেন = पहिरते थे

আব = और

থাকিতেন = रहते थे

(३)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी । वे राजा होकर भी ऋषि मुनिकी भाँति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे । राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्मके काममें संन्यासी थे । घरमें रह कर संन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होंने उसकी सम्भव किया था । वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे । वे खूब पके खिलाड़ी थे, इसीसे उन्होंने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मकी तलवार घुमाकर सभीकी विस्मित किया था ।

चौथा पाठ ।

दयाव = दयाकी

बाड़ीते = घरमें

तेर = तेरह

बार = बारह

मासे = महीनेमें

पार्वण = पर्व

थोला = खुला

अम्रसत्र = अमरचूर्ण

ये = जो

आसे = आवे

थाकिते भावे = रह सकता

एगन = ऐसे

सञ्चान = लड़का वाला

जनपन्निजन = अपने पराये

जग = वास्ते

आकुल = व्याकुल

पान = पाय

ताँमेर = उनका

किछुतेइ = किसीसे भी

सेई = वही

किछू = कुछ

के = कौन

हईल = हुआ

(४)

जनकेर दयावि सीमा छिल ना । बाड़ीते बार मासे तेर पार्वण, उत्सव, आमोद, आह्लाद । आर दान दातव्य रातदिन खोला अन्नसत्र—ये आसे, सेई थाय । तौर राज्ये आर दीन दुःखी के থাকिते পারে ?

एगन ये राजर्षि जनक तौर सन्तान नई । प्रजा, जन-परिजन ओ राजकर्मचारी सकलैरई मुख मलिन । रानी सन्तानैर अग्र आकुल । सकलैर এই भाव देखिया, राजा कोथाओ शान्ति पान ना । कि करेन—तौंदैर अनुबोधे याग यज्ञ करिलेन ; किन्तु किछूतेई किछू हईल ना ।

(४)

जनकके दयाकी सीमा न थी । घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव, आमोद, आह्लाद (होता था) । और दान, दातव्य, रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता । उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था) ?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का वाला नहीं (था) । प्रजा, अपने पराये और राजकर्मचारी सभीका मुँह मलिन (रहता था) । रानी सन्तानके लिये व्याकुल (रहती थी) । सभीका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे । क्या करें—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया ; परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ ।

পাঁচবাঁ পাঠ ।

কবিবেন = করিগে

জায়গা = জগহ

ঠিক = ঠীক

ইইল = হুই

জিনিষ-পত্র = चीज वस्तु

জোগাড় = जीगाड़ जुटाव

ইইতে লাগিল = होने लगा

পোহাইল = सबेरा होना,

बीतना

কাক = कौआ

কোকিল = कोयल

ডাকিয়া উঠিল = पुकार उठी,

बोल उठी

বাগানে = बागमें

কুটিল = खिले, फूटे

অলি = भौरा

তুলিবার = तोड़नेके लिये,

चुननेके लिये

গেলেন = गये

মাঝে = बीचमें

সরোবর = तालाब

তিন = तीन

পাড়ে = ओर, किनारेपर

মাঠ = मैदान, चरागाह

আসিয়া পড়িলেন = आ पड़े

(৫)

আবাব সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরোধ করিল । রাজর্ষি জনক আবাব যজ্ঞ করিবেন । যজ্ঞের জায় ঠিক ইইল, জিনিষ-পত্র যোগাড় ইইতে লাগিল ।

একদিন রাত পোহাইল, কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠি বাগানে ফুল কুটিল, অলি গুন্ গুন্ গাইল । ক্রমে ফুল ও সময় ইইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন । বাগানের মাঝে সবো তাতে কটিকের মত জল । সূর্য্যদেবের সোণার কিরণ আক

शानि लाल करिया। सरोवरर जले खेलितेहे। सरोवरर
तिन पाड़े फुलेर बागान, एक पाड़े खोला माठ। राजर्षि फूल
तुनिते तुनिते माठे आसिया पड़िलेन।

(५)

फिर सभीने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध
किया। राजर्षि जनक फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह
ठीक हुई, चीज वस्तु जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे, कोयल बोल
उठे, बागमें फूल खिले, भौरे गुन् गुन् गाने लगे। धीरे धीरे
फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बागमें गये। बागके बीचमें
तालाब (है), उसमें स्फटिकके समान जल (है)।
सूर्यदेवकी सुनहरी किरणें आकाश को लाल करके तालाबके
पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग है
एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल
चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ ।

आइ = पेड़

ऊँचू = ऊँचा

नीचू = नीचा

जे = वह

जाय करिया = हल चलाकर,

जीतकर

अनाकौटि = तुरत फूटे हुए,

तुरत खिले हुए

गेये = लड़की

छाँद = चन्द्रमा

ज्योत्स्नार = चाँदनीका

नगीर = मकखनका

করা চাই = करना चाहिये

ছাড়িলেন = छोड़ दिया

লাঙ্গল = हल

তাড়াতাড়ি = जल्दीसे

আসিল = आया

ছুটিয়া গেলেন = दौड़कर गये

গরু = बैल

কোলে = गोदमें

যেন = जैसे, मानों

তুলিয়া নিলেন = उठा लिया

আলোকিত = रोशन

সাড়া পড়িল = कोलाहल

উঠিল = उठा

অনায়াস = बिना परिश्रम,

কালে = कालमें

यकायक

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে
 পালা, উহার কোন জায়গা উচু কোন জায়গা নীচু। সে
 চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল
 রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করি
 তে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলে
 কালে সত্ত্বকোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মে
 যেন আকাশের চাঁদ! জ্যোৎস্নার মত রঙ, ননীর মত শরী
 মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি
 গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লে
 জন আসিল, জয় জয়কার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে
 আনন্দের সাড়া পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভ
 বানের নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें लड़ पत्ते (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानों आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है) ! लड़की कैसी लड़की (है) मानों आकाशका चन्द्रमा ! चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीकी गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। राजपुरीमें महा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ ।

गडाई = सच ही, सचमुच

बड़ = बहुत

निये = ले जाकर

बन्दरे = भीतरमें

यउ = जितना

उदू = तब भी

शुधि = मालूम होता है

माजान शैल = सजी गई

फटेकैर = फाटके

छड़ा छड़ा = सरपर

नक्कारखानेमें

राज्यभर = राज्यभरका

मातिन = मतवाले हुए

आपन आपन = अपना अपना

लता पाता = तोरन बन्दनवार साजাইल = सजाया
 क्रेटि = कमी भूषित रहिल = भूषित रहा

(१)

सतई राजर्षिव बड़ आनन्द हईल । आनन्दे
 निरे राजा अन्दरे गेलैन । “भगवानेर दान” এই বলি
 মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন । মেয়ে পাইয়া রা
 আহ্লাদের সীমা নাই ; সে কি যত্ন ! সে কি আদর !
 যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের
 বুঝি ক্রেটি রহিল ।

राजपुरी लता पाता पुष्प पताकाय साजान हईल । कटे
 छुड़ाय छुड़ाय बाछ बाजिया उठिल । राज्यमय उৎसवैर घोष
 हईल । देवालये पूजा अर्चनार धूम पड़िल । राजपुरी आनन्दम
 हईया उठिल । राजार सुखे प्रजार सुख । प्रजाराओ आमो
 मातिल । आपन आपन घर बाड़ी साजहिल । सात रात पर्य
 नगर आलोकमालाय भूषित हईल ।

(३)

सचमुच राजर्षिको बड़ा आनन्द हुआ । आनन्द
 लड़कीको लेकर राजा अन्दरमें गये । “ईश्वरका दान”
 कह कर लड़की रानीकी गोदमें दे दी । लड़की पा
 रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं (रही) ; वह कैसा यत्न !
 कैसा आदर ! जितना यत्न करती थीं, जितना ही
 करती थीं, तब भी मनमें होता था, लड़कीके यत्नमें मा
 होता है कमी हुई ।

राजपुरी तोरन बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई । फाटकोंके ऊपर ऊपर (नकारखानोंमें) बाजे बज उठे । राज्य-भरके उत्सवकी घोषणा हुई । देवालियोंमें पूजा अर्चनाकी धूम पड़ी । राजपुरी आनन्दमयी हो उठी । राजा के सुख से प्रजाका सुख (है) । प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई), अपने अपने घर द्वार सजाये । सात रात तक नगर रोशनीकी लड़ीसे भूषित हुआ ।

आठवां पाठ ।

जग = वास्ते

गांभी = गायें

अजस्य = बिना रुकावटके,

लगातार

जोड़हाते = हाथ जोड़कर

कामना = इच्छा

चलिया गेल = चले गये

विवरण = हाल, समाचार,

व्यौरा

चारिदिके = चारों ओर

कथा = बात

रटनेा हईल = रटी गई

दले दले = दल बाँधकर

आसिते लागिल = आने लगे

शिष्यगणसह = शिष्यगणोंके साथ

आसिलेन—आये

प्राण ७ विरा = जी भरके

बाँर बाँर = जिसकी जिसकी

जिनिष = चीज़

(८)

बाजा मेयेर मञ्जलेर जग बह मणि माणिक्य ७ वत्स सह शत शत गांभी दान करिलेन । नाना राजेय़र दोन दुःखीदिगके आशीर्त धन दिलेन । सात रात सात दिन अजस्य दान चलिल ।

राज्ये राज्ये लोकैर अभावं घृचिया गेल । आशार अधिक दान पाइया सकलेई बोड़हाते भगवानेर निकट राजकन्या दीर्घजीवन कामना करिते करिते आपन आपन देशे चलिआ गेल । राजर्षि जनकेर कन्यालातेर विवरण चारिदिके प्रचारित हईल । मेयेर असामान्य रूपलावण्येव कथा ओ देश रटना हईल । এই अपूर्व मेये देखिबार् जन्तु देश विदेशे लोक दले दले आसिते लागिल । शिष्यगणसह मुनि आसिते लागिलेन, दले दले ब्राह्मण पण्डित आसिलेन, देखिलेन, प्राण भरिया आशीर्वाद करिया चलिआ गेलेन । दले राजगण आसिलेन—मेये देखिलेन, यार यार या आदरे जिनिष छिल, मेयेके उपहार दिलेन, चलिआ गेलेन ।

(८)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि और बखड़े सहित सैकड़ों गायें दान कीं । नाना दीन दुःखियोंको आशाके बाहर धन दिया । सातरात सात लगातार दान चलता रहा । राज्य राज्यमें लोगोंका अभ दूर हुआ । आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते अपने अपने देशमें चले गये । राजर्षि जनकके का समाचार चारों ओर फैल गया । लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं । अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दल के द

আনি লগি । শিষ্যोंকে साथ ऋषिमुनि भी आनि लगे । दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये । दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये ।

नवाँ पाठ ।

পন্ন = बाद

চাইল = चाहा

দিয়া = देकर

ফোটা = खिला हुआ

চোখ = आँख

না জানি = नहीं जानता

আরও = और भी

কত = कितना (बहुत)

মানুষের = मनुष्यका

ইনি = ये

পাওয়া যাইবে = पायी जायगी,

पाया जायगा

কেন = क्यों

শোনে = सुने

আসে = आवे

ফুরায় = पूरा होना

হইতে = से

আসেন = आती थीं

না হইলে = नहीं तो, न होनेपर

(৯)

তাহার পর প্রজারা । দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল ; যার প্রাণে বা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল । রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রানীর কোলে যান ; সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন, মেয়ে দেখেন, আশীর্বাদ করেন, চলিয়া যান । রাজ্যের

मेयेरा शते शते आसे—मेये देखे—रूपेर कत सुखाति
करे । आहा, रूप कि रूप—येन फोटापद्मफूल, टाँदेंर मत मुख
पद्मेर मत चोख, ननीर मत शरीर ! आहा ! এখনई ए
रूप,—बड़ हईले ना जानि आरओ कत सुन्दर हईवे । मा
कि एत रूप कখনओ হয় ? निश्चयई इनि কোন দেব কন্যা
না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন ? এত রূপে
কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে । একদল আসে
একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না ।

(৫)

उसके बाद प्रजा । दलकी दल प्रजाने आकर लड़की देखी
जिसके मनने जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर
घर चला गया । राजसभासे लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई
वहाँ मुनियोंकी स्त्रियाँ, ऋषियोंकी स्त्रियाँ, मुनिकी कन्याएँ
ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया,
चली गई । राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी
रूपकी कितनी सुख्याति की ! आहा ! रूप कैसा रूप,
खिला कमलका फूल । चन्द्रमाके समान मुँह, क
आँखें, मखन सा शरीर । आहा ! अभी ही इतना रूप(है) बड़
होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी । म
इतना रूप क्या कभी होता है ? निश्चय ही ये कोई देवकन्या है
नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें ही क्यों पाई जाती ? इतने रूपकी बात
सुनता था वही एकबार देखनेको आता था । एक दल आ

যা, এক দল जाता था, राज महलकी लोग कम नहीं होती थी ।

दसवां पाठ ।

শেষ = সমাপ্ত

ধরিয়া = পকড়কর

হইতে না হইতে = হোতে ন হোতে

হাটি হাটি = ধীরে ধীরে

বলিয়া = বাস্তবে, কারণে

পা পা = পৈর পৈর

রাখিলেন = রাখা

হাটিতে = চলতা

কেহ কেহ = কোই কোই

ছেলে মেয়েদের সহিত = লড়কী

ডাকিতেন = ডাকারতেন

লড়কियोंकी साथ

হামাগুড়ি = ঘিসকনা घुटअन

খেলার = खेलमें

আঙ্গুল = उँगली

চলনা

যোগ দিলেন = साथ दिया ।

(১০)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজ-কন্য়ার নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল । লাগলের সীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কন্য়ার নাম রাখিলেন সীতা । জনকেব কন্য়া বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন । সীতা দিন দিন বড় হইতে লাগিলেন । মা বাপের কোল ছাড়িয়া, হামাগুড়ি দিলেন । হামাগুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঙ্গুল ধরিয়া, হাটি হাটি, পা পা, করিতে করিতে হাটিতে শিখিলেন । ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন ।

(१०)

यह उत्सव आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राज-
कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ । हलके फालमें
घाई थी इसलिये लड़कीका नाम रक्खा सीता । जनककी
कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनकी जानकी कह कर
पुकारता था । सीता दिनों दिन बड़ी होने लगीं । मा बापकी
गोद छोड़कर, घुटनों चलने लगीं । घुटअन चलना छोड़कर
माँ बापकी उँगली पकड़ धीरे धीरे पाँव पाँव (करते करते)
चलना सीखा । धीरे धीरे नगरके लड़के लड़कियोंके साथ
खेलनेमें भी योग देने लगीं ।

ग्यारहवां पाठ ।

बड़ = बहुत, बड़ा

तिनि = वे

नियेई = लेकर

काछे = पास

सथे = साथ

कथन० = कभी

लेखा पड़ा = लिखना पढ़ना

मांसात्रिक = संसारके

मकल = सभी

बाग बज्ज = होमयज्ञ

थेला = खेल

काजकर्म = काम धन्धा

कतई = कितनाही, बहुत कुछ

पान = पाती थी

आदेश = आज्ञा

अवार = तरह

करिया = करके

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না । তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত । রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায় । যাগ যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে । তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান । কখনও রা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন । ঈশ্বরভক্তি ও সংযম শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের ব্রত, নিয়ম পালনেব ব্যবস্থা করেন । সীতা আশ্রমের সহিত পিতার সকল আদেশ পালন করিয়া কতই যেন সুখ পান ।

(১২)

রাজা আজকাল রাজকে কাম बहुत नहीं देखते थे । वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे । राजा सभा में जाते (तो) उनकी लड़की भी उनके साथ जाती थी । होम यज्ञ करते (तो)—लड़की उनके पास ही बैठती । वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते । कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे । ईश्वरकी भक्ति और संयम शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे । सीता आश्रमसे पिताकी सभी आज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थीं ।

বারহবাঁ পাঠ ।

কান্ত = শান্ত, থকা

শুনে = শুনি

देखिते याबेनई । जनक आर कि करेन—नियेई चलिलेन ।
 आहा, सीता तपोवन देखिया कतई खुसी । ऋषिबालिकাদের
 সঙ্গে খেলা করিরা তাঁর আমোদ ধরে না । হরিণশিশুগুলিকে
 ছুঁগাছি কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক বালিকা-
 দিগকে কল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না । তপোবনই
 যেন তাঁর সুখের জায়গা । সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী
 আসিতে ইচ্ছা করে না । জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে
 সীতার জন্ম তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না ।

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখনি চলে—সীতানি যों-ही ज़िह
 पकड़ ली—“पिता ! मैं जाऊँगी, चलो क्या ?” उसी समय
 गहने कपड़े खोलकर, ऋषि बालिकाके वेशमें पिताके पीछे
 खड़ी हो गई । पितानि कितना ही मना किया—कुछ
 भी न सुना । सीता तपोवन देखनि जायँगी ही । जनक
 अब क्या करें—ले चले । अहा ! सीता तपोवन देखकर कितनी
 खुश (हुई) । ऋषि बालिकाओंके साथ खेल करके उनका जी
 नहीं भरता था । हरिनके बच्चोंको दो-दो नर्म नर्म घास,
 पक्षियोंको चना और बालक बालिकाओंको फल मूल खिला
 कर भी उनका जी न भरता था । तपोवन ही मानों उनके
 सुखकी जगह (थी) । वहाँ जानेपर उन्हें फिर राजमहल आनि
 की इच्छा न होती थी । जनक एक दिनकी बात कह
 जानेपर सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे ।

पन्द्रहवां पाठ ।

पाईवार = पानके

के० = कोई भी

पर = बाद

काके = किसकी

हय = हुई

फेलिया = छोड़कर फेंककर

राखेन = रखा, रखा था

छायय = छाया में, साथ में

बड़टिर = बड़ीका

आवदार = जिह

छोटटिर = छोटीका

भाव = प्रेम

(१५)

सीताके पाईवार पर रानीर एकटि मेरे हय, ताँहार नाम राखेन उर्मिला । कुशध्वज नामे जनकेर एक भाई छिलेन, ताँरओ छुईटि मेरे—बड़टिर नाम माण्डवी, छोटटिर नाम अंत-कीर्ति । ताँराओ सीतार सङ्गे जनकेर स्नेहेर भागी । सीतार सङ्गे ताँदेर बड़ई भाव । के० काके फेलिया थाकिते पारेन ना । सीतार छायाय थाकिया ताँराओ सीतार मत हईया उठिलेन ।

सीतार शिशुकाल गिराछे, बाल्यकालओ याय याय । ताँर शरीरेर कांति दिन दिन राड़िते लागिल । एखन आर से चक्षलता नाई, से आवदार नाई, से बायना नाई । मधुर लज्जा आसिया येन सब दूर करिया दिल् ।

(१५)

सीताको पाने बाद रानीको एक लड़की हुई, उसका नाम रखा उर्मिला । कुशध्वज नामके जनकके एक भाई थे, उनकी भी दो कन्याएँ (थीं)—बड़ीका नाम माण्डवी, छोटीका

नाम श्रुतकीर्त्ति (था) । वे भी सीताके साथ जनकके भगिनी (थीं), सीताके साथ उनका बड़ा ही प्रेम था । को किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं । सीताकी छा रहकर वे भी सीताकी भाँति हो गईं ।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने जानेपर है उसके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी । अब और चंचलता नहीं है, वह ज़िद्द नहीं है, वह बहाना नहीं है मधुर लज्जा ने आकर मानों सब दूर कर दिया ।

सोलहवां पाठ ।

प्राणपणे = प्राणभरके

मूहूर्तउ = मुहूर्तभर भी

बोनदिगके = बहिनोको

पाड़ापड़सीरा = अड़ोसी

भालबांसेन = प्यार करती थीं

पड़ोसी स

जनपरिजने = अपने परायें पर, धिरिया थाके = घेरे रहती थी

ठावना = चिन्ता, विचार

कारउ = किसीका भी

ठावेन = विचारे

छोथे = आँखमें

सखीरा = सखी सब

लुटिया = लोटकर

छाड़िया = छोड़कर

(१७)

सीता एतन प्राणपणे मा बापेव सेवा शुश्रूषा करेंन, बोन दिगके प्राणैव सहित भालबांसेन, दासदासीदिगके स्नेह, जन परिजने दया करेंन । सीता येन सकलैव सुख छूथेर ड व

अनुवाद विषय ।

भावेन । सखीरा सीताके छाड़िया एक मुहुर्त ठाकिते पारैन
ना । पाड़ापड़सीरा सर्वदा ताँके घिरिया थाके । पशुपक्षी-
देर पर्यन्त सीताई सब । सीता याके पान, ताकेई प्राण दिया
स्नेह करैन, यत्न करैन, आदर करैन । कारुण्य कष्ट देखिले
सीतार चोखे जन धरै ना, सीतार आकुलताँ सोमा थाके ना ।
सीतार व्यवहार देखिया जनक भावेन—ए कि ? ए कि
आमार सीता ? ए तो देवी ! तार शरीरे देवतार मत्त
ज्योतिः, हृदये देव भाव । ये देखे सेइ येन चरणे लूटिया
पड़िते चार । आनन्दे राजर्षिर प्राण मन भरिया उठे ।

(१६)

सीता इस समय जी भरके मा बापकी सेवा श्रुश्रुषा करती
थीं, बहिनोंकी जीसे प्यार करती थीं, नौकर-मजदूरिनां पर स्नेह,
अपने पराये पर दया करती थीं । सीता मानों सभीके सुख
दुःखकी चिन्ता करती थीं । सखियाँ सीताकी छोड़कर, एक
क्षण भी नहीं रह सकती थीं, पड़ोसिने सदा उनको घेरे
रहती थीं । पशु पक्षियों तक को सीता ही सब कुछ थीं ।
सीता जिसको पाती थीं, उसको ही जी भरके प्यार करती थीं,
यत्न करती थीं, आदर करती थीं । किसीका भी कष्ट देखनेसे
सीताकी आँखोंका पानी नहीं रुकता था, सीताकी व्याकुलता
की सीमा नहीं रहती थी । सीताका व्यवहार देखकर जनक
बिचारते थे—यह क्या ? यह क्या मेरी सीता(है) ? यह तो देवी
(है) ! उसके शरीर पर देवताओंकी भाँति ज्योति(है) । हृदयमें देव

भाव (है), जो देखता (है), वही मानों-पैरोपर लोट
बाहता है । आनन्दसे राजर्षिका प्राण मन भर उठता (है) ।

সতহুঁ পাঠ ।

छड़इया पड़िन = ছাড়াইয়া পড়িল = ছাড়া মর্মে

देइ = দে

पपे = রাহমেন

वर = বর

हाटे भाटे = হাটবাটে

काके = কিসকো

जागिया उठिन = জাগ উঠি

ये = जो

पानेकर = পানেক

रहणै = यह रह

भाट = भाट

करि = करे

लाइन = टूटा

ऐकरूप = इसी तरहकी

दिव = दूंगा

अनुते = धनुषमें

नार = किसका

छिना = चाप

कोह = पास

पराइया = पहिनाकर

(১৭)

সীতার অসামান্য রূপ, অসামান্য গুণ; এই রূপ-গুণে
কথা শুনেছে ছড়াইয়া পড়িল । যে রাজ্যেই বাও সীতা
রূপ-গুণের কথা । পাপে ছু'জনে কথা বলিতেছে—সীতার রূপ
গুণের কথা । রাজদরবারে রাজার রাজার, হাটে মাঠে, প্রজ
এসায়, যেন যেন, কি রাগি, কি গৃহস্থ, কি ভিক্ষারিণী, সকলেই
কল—সেই সীতার রূপ-গুণের কথা ।

এই অসামান্য কন্যারই মাটির আশা, সকল দেশের রাজ-

पूज्येण प्राणेन जागिया उठिल । सकलेन सीताके पाईवार
जन्म जनकेर निकट भाट पाठाईते लागिलेन । कोन कोन
छुफ राजा बलपूर्वक सीता लाभेउ भयउ देखाईलेन । राजर्षि
जनकेर चमक भाङ्गिल ।

“अमन सोणार चाँद मेये काके दिव ? के ऐर यथार्थ
आदर करिते पारिवे ? के एई रत्नेर मूल्य बुझिवे ?
सीताके छाडिया आमिई वा केमन करिया थाकिव ?” एई
रूप चिन्ता तौर मने आसिल । किन्तु चिन्ता करिया कि
हईवे ?—“मेये तो विये दितेई हईवे । एखन
कार काछे देई ? के उपयुक्त वर ? काके दिले
मेये सुखे थाकिवे ? ये रत्नेर जन्म पृथिवी लालायित, कार
अमन बल आछे ये निजबले रत्नटी रक्षा करिते पारिवे ?
सेई बलेर परीकाई वा केमन करिया करि ?” एरूप चिन्ता
करिते करिते हरधनुर कथा तौर मने पड़िल । ए पर्याप्त
केह से धनूते छिला दिते पारे नई । तिनि प्रतिज्ञा करि-
लेन—“मिनि हरधनूते छिला पराईया भाङ्गिते पारिवेन,
आमि तौहाकेई एई कन्यारत्न दान करिव ।”

(१३)

सीताका असामान्य रूप, असाधारण गुण (हैं) ; इस रूप-
गुणकी बातें जगत्में छा गईं । जिस राज्यमें जाओ
सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं) । राहमें दो मनुष्य बातें करते
हैं—सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं) । राजदरबारमें, राजा

राजामें, हाटवाटमें, प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या र
क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही
रूप-गुणकी बातें ।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब
राजकुमारोंके मनमें जाग उठी । सभी सीताको पानेके
जनकके पास भाट भेजने लगे । किसी किसी दुष्ट र
बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया । राजर्षि
नींद टूटी ।

“ऐसी सोनेकी चाँद लड़की किसको दूँगा ?
इसका यथार्थ आदर कर सकेंगा ? कौन इस रत्नका
समझेगा ? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह
सकूँगा ? यही चिन्ता उनके मनमें उठी । परन्तु चिन्ता
क्या होगी ?—“लड़की तो व्याहनी ही होगी
अब किसके पास दे ? कौन उपयुक्त वर (है) ? किसे
से लड़की सुखी होगी ? जिस रत्नके लिये पृथिवी
है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नकी
कर सकेगा ? उस बलकी परीक्षा ही किस तरह करे ?
इसी तरहकी चिन्ता करते करते हरके धनुषकी
उनके मनमें आई । अबतक कोई भी उस धनुषमें
न चढ़ा सका । उन्होंने प्रतिज्ञा की—“जो हरके
चाँप चढ़ाकर तोड़ सकेगा, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दा
करूँगा ।”

अष्टारहवां पाठ ।

पण = प्रण

याहिया = जाकर

सब चेये = सबसे

हरधनु = हरका धनुष

भाङ्गा = तोड़ना

(१८)

धेमन अपरूप मेये, पृथिवीर सार रत्न सीता—तेमन
तौर विवाहेर पणउ हईल सब चेये कठिन काज—हरधनु
भाङ्गा ।

जनकराज्यार प्रतिज्ञार कथा राज्य राज्य घोषित हईल ।
याँरा ताट पाठाईयाछिलेन, तौरा निराश हईलेन । वीर बलिया
याँदेर गौरव आछे, तौरा आनन्दित हईलेन ।

कार आगे के धनुक धरिबे, के आगे याहिया सीता लाभ
करिबे—एई जग्न सकल राज्यै सौज सौज रव पड़िया गेल ।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की, पृथिवीकी सार रत्न सीता (है)—
वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम
—हरका धनुष तोड़ना ।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्य में घोषित
हुई । जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए । वीर रहनेके
कारण जिनका गौरव है, वे आनन्दित हुए ।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा, कौन आगे जाकर

সীতা-লাভ করিগা—ইসকে লিয়ে सभी राज्योंमें तय्यारि
धूम मच गई ।

उन्नीसवां पाठ ।

এ পর্য্যন্ত = অবতক

কেহবা = कोई भी

যত = जितने

কাজেই = लाचार ही

হাতী = हाथी

একে একে = एक एक

সিপাই = सिपाही

জাঁকজগক = शानशौक

সাল্তী = हथियारबन्द सिपाही,

আমাই = आना ही

পহরেদার

মহাভান্নায় = बड़ी

লোক-লঙ্কর = मनुष्य-फौज

এত মাধের = इतनी

ধনুক = धनुष

এনে দাও = ला दो

পিট্টোন্ = भागना

প্রভু = ईश्वर

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল ।
ঘোড়া, সিপাই-সাল্তী, লোক-লঙ্কর, যে কত, তার
কার আগে কে ধনুক ধরিতে তা নিয়ে বিবাদ ।
ধনুক দেখিয়াই পিট্টোন্, কেহবা তুলিতে
কেহবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহই পারি-
ত দূরের কথা । কাজেই একে একে সব
সীতার আর বিবাহ হইল না । কেহ কেহ
শ্রুতকীর্ত্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন ; কি

ना हईले तौहादेर बिये किरूपे हय ? राजपुत्रादेर केवल
जँकजमक करिया आसाई मार हईल ।

राजर्षि जनक महाभावनार मध्ये पड़िलेन—आमार एत
साधेर मेये, तार बिरे हईवे ना ? आमि केन एमन प्रतिज्ञा
करिলাম । आमार दोषेई त एमन हईल ।—राजा निजके
निजे कत निन्दा करेन । षोड़हाते सजलनयने भगवानके
डाकेन, आव बलेन, “प्रभु ! सीतार वर कोथार ? एने दाउ
प्रभु ।”

(१८)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (घे) सब आयै । साथमें
हाथी, घोड़ा, सिपाही-पहरेदार, मनुष्य फौज कितनी (यौ), उसकी
संख्या नहीं (है) । किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब
इसीका भगड़ा (है) । कोई राजा धनुष देखकर ही भागे, किसीने
उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चाप न
चढ़ा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है) । लाचार हो एक एक
करके सब चले गये । सीताका व्याह नहीं हुआ । किसी
किसीने उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे व्याह करना चाहा,
परन्तु सीताका व्याह बिना हुए, उनका व्याह कैसे ही ?
राजपुत्रोंका केवल शानशौकतसे आना भर ही हुआ ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पड़े—मेरी इतनी प्यारी
लड़की, उसका व्याह न होगा ? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की । मेरे
दोषसे ही तो ऐसा हुआ ।—राजा अपनी आप कितनी निन्दा

করতি থে। হাথ জোড়লর আঁখোঁমিঁ আঁসু মরে হুए ই
মুকারতি আর কহতি থে—“প্রমু ! সীতাকা বর কহাঁ (হে)
দো প্রমু ।”

বীসবাঁ পাঠ ।

ঠাট্টা = ঠাট্টা

বল = কহী

সই = সখী

উহা = বহ

কপালে = ভাঙ্গ্যমিঁ

অদৃষ্ট = ভাঙ্গ্য, কর্ম

জুটিবার = জুটনিকা, মিলনিকা কিরিয় গেলেন =

যা হয় = জো হী, জো জী চাহি

(২০)

সীতার মনে কোল চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা
রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না
গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল
উঠিলে কি ? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখ
তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা
এক রাজা আসে, আর অমনি “সই, তোর বর এ
বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি
কপালে বিয়ে নাই” বলিয়া দুঃখ কবিতে থাকে।

ইহাতে সীতার মনে কোন উদ্বেগ নাই।
“ভগবান যাকে নির্দেশ করিয়াছেন, তিনি অ
রক্ষা হইবে। তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা য
দিলে ত হইবে না।” সখীরা বলে—“তো

सृष्टिछाड़ा पण ताते यमराज भिन्न अग्रवर जूटिवार उपाय नई ।”

सीता बलेन “बाबा आमार भालर जगुई पण करियाछेन ।
तोमरा आमाके या हल बल—बारार कथा केन ?—मा-बाप या
करेन, मन्तानेर मन्त्रलेर जगुई करेन । ताते यदि मन्तान-
दुःख पाय, उहा तार अदृष्टेर फल ।”

(२०)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है । कितने राजा आये,
राजकुमार आये, धनुष पर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण
लौट गये । किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी ।
उसके नहीं उठनेसे क्या (हुआ) ? तब भी उनकी विपद उप-
स्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं
(है) । वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं) । एक एक राजा
आता है, इस तरह “सखी ! तेरा वर आया” “वर आया”
कहकर तड़क करती हैं । ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही
“सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है” कहकर दुःख करती हैं ।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है) । सीता कहती
हैं—“भगवान् ने जिसको निर्देश किया है उनके आनेपर
अवश्य प्रणकी रक्षा होगी । उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब
जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा ।” सखी कहती हैं
—“तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे
यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है ।”

सीता कहती थीं—“पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

है। तुम सब मुझे जो चाहो कहो—पिताकी बात (कहती हो) ? मा बाप जो करते हैं सन्तानके मंगलके ही करते हैं। उससे यदि सन्तान दुःख पाय (तो) वह उस भान्यका फल है।”

इक्कीसवाँ पाठ ।

प्रकाश = बहुत बड़ा

वाताम = हवा

बाड़ी = मकान

छुपि छुपि = चुपचाप

तोरण = फाटक

पानाईतेछे = भागती है

कारुकार्ये = कारीगरीके

डूबितेछे = डूबती है

कामसे

उठितेछे = उठती है

खचित = खचा हुआ

उतराती है

चण्डा = चौड़ा

छेउये छेउरे = तरङ्गीपर,

प्रांशे = ओरमें

विकालबेला = तीसरेपहर

गडा = बनाया हुआ,

उड़िया = उड़कर

ताड़ा खाया = घक्का खाकर

बेड़ाइतेछे = घूमती है

राग्रा = रंगीन

(२१)

राजर्षि जनकेर प्रकाश बाड़ी। समुखेर तोरणटि बे सुन्दर। नाना कारुकार्ये खचित। तोरणेव बाहिरे चण्डा रास्ता। रास्तार दुई प्रांशे सुन्दर फूलेर बागान। विक बेला बागाने नानाविध फूल फूटितेछे; अलिगण फूलेर प्राइकार जन्तु गुन् गुन् कविया उड़िया बेड़ाइतेछे। बात

फूलों मधु चुरि-कबिया, छुपि छुपि पालाईतेहिल, पश्चिम दिक्के
राखा रबि र ताड़ा खईया येन नदीर जले पड़िया गेल । जलेर
उपर दिया दौड़िते दौड़िते—एकवार डुबितेहे आबार
उठितेहे । टेउये टेउये एक रबि येन शत रबि हईया तार
पिछने पिछने छुटितेहे ।

तोरगटि-बेशी-उच्च नय । तार सामने फूलों बागान ।
कातारे कातारे फूलों गाछ । गाछे गाछे फूल-आर फूलों
कलि—कोनटि फुटियाहे, कोनटि फोटा फोटा हईयाहे । এই
खानि सीतार आपन हाते गड़ा फूलवन । साँकेर धूसर आँधार
आसिबार आगेई रोज सीता फूलवने देवीर मत बान्दिगके
साथे लईया गाछे गाछे जल दिते आसेन । आजओ आसिया-
हेन । जल देওয়া শেষ हईयाहे । सीतार हातेर जल पाईया
गाछुलि येन आनन्दे हासिया उठियाहे ।

(२१)

राजर्षि जनकका मकान बहुत बड़ा (है) । सामनेका
फाटक बहुत सुन्दर (है) । बहुतसे कारीगरोंके कामसे खूब
हुआ (है) । फाटकके बाहर चौड़ा-रास्ता (है) । रास्तेके
दोनों तरफ सुन्दर फूलका बाग (है) । तीसरे पहरको बागमें
बहुत तरहके फूल खिलते हैं ; भौरे फूलका मधु पीनेके
लिये गुन् गुन् करके उड़ते फिरते हैं । हवा फूलका मधु
चोरी करके चुपचाप भागती थी, (परन्तु) पश्चिम ओर
रंगीन सूर्यका धक्का खाकर मानों नदीके जलमें गिर पड़ी ।

पानीके ऊपरसे दौड़ती दौड़ती—एकबार डूबती है, फिर उतराती है। ठेड़ ठेड़पर एक रवि मानों सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है)। उसके सामने ही फूलका बाग (है)। कतारसे फूलके पेड़ (हैं), पेड़ पेड़में फूल और फूल की कल्लि—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलबन है। सन्ध्याका धूसर अँधेरा आनेके पहिलेही रोज़ सीता फूलबनमें देवीकी भाँति बहिनोंको साथ लेकर पेड़ पेड़में जल देने आती हैं। आज भी आई हैं। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड़ मानों आनन्दसे हँस उठे हैं।

सावित्री।

बाईसवाँ पाठ।

शूरे शूरे = घूम घूमकर

देखाते = दिखाने

जागिलेन = लगे

किश् = एक प्रकारकी चिड़िया

गबूर = मोर

नाछछे = नाचता है

आलो = रोशनी

देख छते = देखती हो तो ?

आड़ = आड़, अन्तराल

पाछे = पीछे

शराते शय = खोना पड़ता है

दिके = तरफ

एक दृष्टिते = टकटकी बाँधकर

छेय आछेन = देख रही हैं

शोराय = हवामें

पात = पत्ता

आज 'ओ-कि' देखें = आज नड़े = हिलता है
 वह क्या देखेंगी बूक = कलेजा
 कैपे उठे = काँप उठता है छिनिये = छीनकर
 शुकनो = सूखा हुआ निते = लेजाने के लिये
 बरे पड़े = झड़कर गिरता है आस्ते = आता है

सावित्री ।

(२२)

ए दिक 'ओ दिक' घुरे 'घुरे' सत्यवान सावित्रीके बनेर शोभा देखा'ते लाग्लेन । ए देख, ए किसे उड़'छे, अशोक डाले मयूब नाच'छे,—ओ सावित्री, देख'छ तो ?—सावित्री आज ओ कि देख'बेन ! चोखेर आड़ कर'ले पाछे हाराते हर, एह भये तिनि स्वामीर मुखेर दिके एकदृष्टिते चेये आछेन । हाँयार गाछेर पाता नड़े,—सावित्रीर बूक कैपे उठे ! शुकनो पाता ब'रे पड़े—सावित्री आवेन, ए बूकि के सत्यवानके छिनिये निते आस्ते !

(२२)

इधर उधर घूम घूम कर सत्यवान सावित्रीकी बनकी शोभा दिखाने लगे । यह देखो, यह फिङ्गे उड़ता है, अशोककी डालपर मोर नाचता है—ए सावित्री, देखती हो तो ?—सावित्री आज वह क्या देखेंगी ! आँखकी ओट करनेपर खोना पड़ेगा इसी भयसे वह स्वामीके मुँहकी ओर एकदृष्टिसे देख रही हैं । हवासे पेड़का पत्ता हिला,—सावित्रीका

कलेजा कांप उठा ! सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—सा
यह समझकर कि कोई सत्यवानको छीन लेनेके लिये
चिन्तित हुई ।

तेईसवाँ पाठ ।

| | |
|---------------------------|---------------------|
| शशं = हाथ | नेमे एम = उतर आओ |
| आपन = अपना | फुरिये गेल = बीत गय |
| छेपे धरन = दबा धरती है | आँधर = अंधेरा |
| ভয় ভয় কর্‌চে = डर मालूम | খণ্ডান জায় = काटी |
| होता है | বাথায় = दर्दसे |
| কাঠ = लकड़ी | মাথায় = माथेकी |
| কেটে = काटकर | দারুণ = भयानक, |
| চল = चलो | |
| কাটতে = काटनेके लिये | ছট্‌খট্‌ = छटपट |
| উঠেন = उठे, चढ़े | চলে পড়লেন = ट |
| তলার = नीचे | দেহ = शरीर |
| দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर | কালি = काला |
| পানে = ओर | হয়ে গেছে = हो |
| রইলেন = रही | মুখ দিয়ে = मुँ |
| হয়েছে = हुआ है | কেনা উঠছে = |
| ডেকে ডেকে = पुकार | আঁথির পাতা |

(२०)

अमनि : तिनि दिगुण जोरे स्वामीर हात आपन हाते चेपे धरेन । सावित्री बल्लेन—आमार केमन भय भय करचे, तूमि शीघ्र काठ केटे घरे चल । सत्यवान आर देरि ना क'रे काठ काट्ते गाछेर उपर उठ्लेन । गाछेर तलाय दाँडिरे सावित्री स्वामीर मुखेर पाने चरे रहिलेन । “काठा डालेर स्तूप हयेछे, काठेर बोका भारि हयेछे—एखन नेमे एस !” सावित्री गाछेर तला थेके डेके डेके बल्लेन—नेमे एस, एखन नेमे एस ! बेला ये कुरिये गेल, बनेर पथ आँधार ह'ल—एखन नेमे एस !

सत्यवान गाछेर उपर थेके एक-पा दु-पा करे नीचे नेमे आसूचैन, एमन समग्र—विधिर लिपि ना खण्डान याय—दारुण माथार ब्याथार-हट्कट क'रे तिनि गाछेर तलाय च'ले पड्लेन । सावित्री छूटे एसे देखेन—स्वामीर देह कालि ह'ये गेछे, मुख दिये फेना उठ्छे, आँखिर पाता नडे ना—हाय हाय, ए कि हल !

(२१)

यह विचार कर उसने दूने जोरसे स्वामीका हाथ अपनी हाथमें चाँपकर पकड़ लिया । सावित्रीने कहा—मुझे कैसा भय मातूम होता है, तुम जल्दी लकड़ी काटकर घर चलो । सत्यवान और दूर न करके लकड़ी काटनेके लिये पेड़पर चढ़े । पेड़के नीचे खड़ी होकर सावित्री स्वामीके मुँहकी ओर

देखती रहीं। “काटी हुई डालकी ढेर हुई है, बोझा भारी हुआ है—अब उतर आओ!” पेड़के नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—“उतर आ उतर आओ! समय हो गया, बनकी राह अब उतर आओ।”

सत्यवान पेड़के ऊपरसे एक पैर दी पैर उतरे आते हैं, ऐसेही समय—भाग्यका लिखा हुआ जाता—माथेके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह ढलक पड़े। सावित्रीने दौड़कर देखा—खामीका हो गया है, मुँहसे फेन निकल रहा है, नहीं हिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ!

चौबीसवाँ पाठ ।

| | |
|-------------------------------|------------|
| एक शब्द = एक ओर | बाझड़ = चम |
| देह = शरीर | डूलटे = |
| ढकाणेर बधू = दुलहिन | थमे पड़ते |
| एकना = अकेली | इपूर = दो |
| फेटे = फटकर | केटे = |
| काना = रोना | जाड़ा = |
| उथले = उथलकर | शुद्ध = |
| बूक छेपे = कलेजा दबाकर | इसै = |
| शेखान = सियार | आगले |
| डोकटे = प्रकारता है, बोलता है | |

(२४)

एक धारे काठेव बोवा, एक धारे स्वामीर देह—कोणेर
बधू सावित्री এই আঁধার বনে একলা এখন কি করবেন !
বুক ফেটে তাঁর কান্না উথলে উঠল—জোর ক'বে, তিনি বুক
চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে বনের ভিতর ব'সে রইলেন ।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত । ঘুরঘুটি আঁধারের মাঝে
শেয়াল ডাক্চে, বাড়ুড় ছল্চে, গাছের পাতা খসে পড়্চে—
সাवित्री स्वामीर देह बूके चेपे स्वामीर मूर्ति ध्यान कर्छेन ।
देखते देखते दुपूर रात केटे गेल, तब तो তাঁর साड़ा
नेई—काठेर मत शक्त ह'ये, सावित्री स्वामीर देह आग्ले
रइलैन ।

(२४)

एक ओर काठका बोभा, एक ओर स्वामीका शरीर—
दुलहिन सावित्री इस अंधरे बनमें अकेली इस समय क्या
करेगी ! कलेजा फटकर उनकी रुलाई आई—जोर
करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठा-
कर बनमें बैठी रहीं ।

अंधरे पक्षकी अंधरी रात (है) । घनघोर अंधकारमें सियार
बोलता है, चमगादड़ डोलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता
है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी
मूर्त्तिका ध्यान करती है । देखते देखते दो पहर रात्रि बीत
गई, तब भी तो उनका शब्द नहीं—(सुन पड़ा है)

কাঠকী ভাঁতি কঠোর হোকার সাবিত্রী স্বামীকে শরীরকী
কিয়ে রহিঁ ।

উমা ।

পঞ্চীসবাঁ পাঠ ।

ক্রমে ক্রমে = ধীরে ধীরে

দিন দিনই = দিনো দিন

শিশু = বচ্ছা

বাড়িতে লাগিল = বড়নে

একটু একটু করিয়া = थोड़ा

লয় = লেতা যা

थोड़ा করকে

চাঁদপানা = चाँद सरीखा

একটুখানি = ছোট্টা, थोड़ा

জোছনা মাথা = ज्योति भ

জ্যোৎস্না-পরিপূর্ণ = ज्योति

বিলাইতেই = बाँटनेके लि

भरा, चाँदनी भर

সেরূপ = उस तरह

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কণ্ঠাটী বড় হইয়া উঠিল । প্রতি
চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু
করিয়া বড় হইয়া জ্যোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া
হিমালয়ের শিশু মেয়েটিও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উ
দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল ।

যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয় ।

চাঁদপানা মুখ, ভেমনি জোছনা মাথা শরীর ; তা আবার

মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয় ! মনে হয় যেন

बीते आनन्द बिलाईतेई भगवान मेयेटीके आनन्दधाम थेके पाठिये दियेछेन !! हिमालयेर बाडीते रोज बसु बासुवगण आसिते लागिल । ताहारा त मेयेर रूप देखिया अवाक । पर्वतेर मेये किना, तई सकले आदर करिया उहाके "पार्वती" बलिया डाकित ।

पार्वतीर मा बापेर कथा आर कि बलिब । पार्वतीके पेये ताहारा येन हाते टाढ पेयेछेन । मेयेर दिके चाहिले, ताहादेर आर झुधा, तृष्णा थाके ना । एक मिनिट मेयेटी चोखेर आडाल हईले मा बाप येन अश्विर हईया पड़ेन ।

उमा ।

(२५)

धीरे धीरे बच्चा कन्या बड़ी हो गई । प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहली छोट्यासा रहता है और रोज रोज थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी बच्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई । दिनों दिन उसका सौन्दर्य बढ़ने लगा । लड़कीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह गोदमें लेता (है) । जिस तरह चांदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिभरा शरीर (है) ; वह फिर मखनसा कोमल है । ऐसी लड़की क्या दूसरी होती है । मनमें आता है, मानों पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवान्ने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है !! हिमालयके

मकानपर रोज़ बन्धु-बान्धवगण आने लगे । वे तो लड़की
रूप देखकर अवाक (हो गए) । पर्वतकी लड़की है कि
इसीसे सभी प्यार करके उसे “पार्वती” कहकर पुकारते हैं ।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा । पा
की पाकर उन्होंने मानों हाथमें चाँद पाया है । लड़कीक
ओर देखने पर उन्हें फिर भूख प्यास नहीं रहती है ।
मिनिट लड़की आँखोंकी ओट होने पर माँ बाप मानों प्रस्थि
हो जाते हैं ।

छब्बीसवां प्राठ ।

बाँटी = कटोरी

माँदा माँदा = सफ़ेद सफ़ेद

बिन्नूक = सोपी, चमच

बालिगुलि = बालू

एने दिलेन = लादिया

रूपार-गत = चाँदीके समान

पूतून थेनार = गुड़िया

बिक्किक् करे = चमकता था,

खेलनिका

भिलमिलाता था

पूतून = गुड़िया, पुतली

बालिराशिते = बालूकी ढेरमें

माँटीनेर = साटनका

परिवेशन करे = परोसती थी

जामा = कपड़ा, पोषाक

आध आध श्वरे = तोतली

बेगुने = बैंगनी

भाषामें

बाल्मल = भिलमिल

बयस = अवस्था, उम्र

बहिरा चलियाछे = बह चली है

(२७)

राप आदरकरे मेरेव जग सोगाव छुधेर बा

७ हीबार बिनुक एने दिलेन । पार्वती यখন आध आध अरे
 “मा” बलिउ, तखन मेनकार आनन्द देखे के । क्रमे पार्वतीर
 वयस ३४ बरस बहिल । एखन त पुतुल खेलार समय । पार्व-
 तीर पुतुलेर अभाव कि ? कत सोणार पुतुल, रूपार पुतुल,
 फटिकेर पुतुल, आर तादेर कत रकमेर जामा । साटिनेर जामा,
 रेशमेर जामा ; लाल, नील, वेणुने, कत रङ्गेर जामा, आर तार
 माके हीरा, मानिक, बल मल करे । पार्वती खेलार साथीदेव
 सङ्गे पुतुल खेला करे । पुतुलेर विये हर, आर कत आनोद
 प्रमोद ह वा हर । राजवाड़ीर पाश दियाई गङ्गा नदी बहिया
 चलियाछे । उहार तीरे सादा सादा बालिगुलि रूपार मत बिक-
 मिक करे । पार्वती सथिगण लहिया सेह बालिराशिते खेला
 करिते याय । सोणार हाँड़िते बालि दिया भात राँधे, आर
 पुतुलेर वियेर समय सकलके निमल्लन करे थाँयार । बवेर
 बाड़ी हईते कत लोकजन आसे, पार्वती सोणार थाले बालिर
 भात ७ पात्रार तबकारी पबिवेशन करे ।

(२६)

बापने प्यार करके लड़कीके लिये सोनीकी दूधकी कटोरी
 और हीरका चमच ला दिया । पार्वती जब तोतली स्वरमें
 “माँ” कहती (थी) उस समय मेनकाका आनन्द कौन देखे ।
 धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार वर्षकी हुई । अब तो
 गुड़िया खेलनेका समय (है) । पार्वतीको गुड़ियेका क्या अभाव
 (है) ? कितनी ही सोनीकी पुतली, चाँदीकी पुतली, स्फटिककी

पुतली और उनकी कितनी रंगकी पोषाक
 रेशमकी पोषाक, लाल, नीली, बैंगनी
 उसके बीचमें हीरा, माणिक, भिलमिल
 की साधिनोके साथ गुड़िया खेलती है। गु
 है और कितनी ही हँसी खुशी होती हैं। र
 गंगानदी वह चली है। उसके किनारे पर
 चाँदीकी तरह भिलमिल करती है। पार्वती
 उसी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोने
 डालकर भात सिभाती है और गुड़ियेके
 सभीको निमन्त्रण करके खिलाती है। वरके
 मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालीमें
 पत्तेकी तरकारी परोसती है।

सचाईसवां पाठ ।

जागड़े-वाड़ी = जवाईके घर

काग्रा = रोना

स्थनाधुनाय = खेल कूदमें

मिथिवात्र = सीखनेका

शुक्रमा = शिक्षिका

रुना = युक्त अक्षर

बानान = वर्ण-विचार

शेष = समाप्त

छविर = तस्वीरकी,

चड़े = किताब

आनिश मिनेन =

मे गुलि = वह सब

शामे = हँसती थी

गिनिते छात्र = निगल

(२१)

आब मेरे पुतुलट्टीके जामाई-बाड़ी নিয়ে গেले, पार्वती कान्हा आरम्भ करे । से दिन रात्रिते आर भात थाय ना । एमनि भावे खेलाबुलाव पार्वतीर दिन चलिते लागिल । एसब देखिया बाप मायेर मने आर आनन्द धरे ना । क्रमे पार्वतीर लेखापड़ा शिथिवार समय हईल । से राजकन्या, तार त आर-सूले गिया-पड़िते हईवे ना । पर्वतराज बाड़ीतेई शुरुमा राखिया दिलेन । पार्वती सोणार पातार हीरार कलम दिया 'क' 'ख' लिखिते लागिल । छय मामेर मध्येई कला, बानान, शेष हईया गेल । एखनत छबिर बई पड़िवार समय । बाप आदब करिया कत सुन्दर सुन्दर छबिर बई आनिया दिलेन, पार्वती सेगुलि देखे, आर हासे । कि सुन्दर छबि ! एकटा बेङ किना एकटा हाती गिलिते चाय । बेङेव कि साहस । पार्वती छबि देखिया हासे, आब मने मने भावे, बेङ कि कখনउ हाती गिलिते पाखिबे !

(२७)

और कन्या गुड़ियेको जवाईके घर ले जानिपर पार्वती रोना आरम्भ करती है । उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती । इसी भावसे खेलकूदमें पार्वतीका दिन बीतने लगा । यह सब देखकर बाप मा के मनमें आनन्द नहीं समाता । क्रमसे पार्वतीका लिखना पढ़ना सीखनेका समय हुआ । वह राजकन्या (है), उसे तो स्कूल जाकर पढ़ना न

উত্তীসবাঁ পাঠ ।

গানও = গানা মী

স্বামীকে = পতিকো

রাঁধিতে = রসোই বনানা

ছুটাছুটি = দৌড়-ধূপ

তখনকার = उस समयकी

লুকোচুরী = লুকাচোরী

ছাড়া = ছোড়কর, অলাবি

বাল্যকাল = लड़कपन

শিখিয়াছিল = सीखा था

যৌবন = जवानी

বাবুগিরি = बाबुआनी

চলিয়া গেল—बीत गया

কাটাইতে = काटने

(২৯)

পার্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল, তা নয় । তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন । সন্ধ্যার সময় পার্বতী য গুরুমার নিকট গান করিত, তখন তাহার সুমিষ্ট স্বর শু সকলে মুগ্ধ হইয়া বাইত । দেবতাও এমন সুন্দর গান পারেন না । গান ছাড়া পার্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল । কাব রাজকন্যা কেবল বাবুগিরি করিয়া দিন কাটাইত বিয়ের পর তাহার হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাও । পার্বতী যে শুধু পুতুল খেলা করিত, তা নয় । অনেক সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও রকমের খেলা খেলিত । ইহাতে তাহার শরীরে যেমন শ হইয়াছিল, তেমন সৌন্দর্য্যেরও বৃদ্ধি হইয়াছিল । এ পার্বতীর বাল্যকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना-पढ़ना सीखा था, वही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सिखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बावुआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थीं)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके सङ्ग दौड़-धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानो आ पहुँची।

तीसवां पाठ ।

वाड़िया उठित = बढ़ उठा

आकिया राथियाछे = अङ्कित

विकसित इश्या उठे = खिल

कर रखी है

उठता है

आय्येर = पैरकी

छेश्या = चेहरा

अशूनिते = उँगलीमें

छिजकर = चित्रकार, तस्वीर

शाटिया याईत = हट जाती

बनानेवाला

योध इहेत = मालूम होता था

আল্‌হাব রস = অলতিকা রস হাঁটু = ঘুটনে

বাহির হইতেছে = নিকাল রহা সরু = পতলা

হৈ শিরিষ = সিরীস

মাটিতে = মিট্টীমৈ কুসুম = ফুল

স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর । এখন যৌবনকাল
তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল । সূর্যো
কিরণে পদ্ম যেন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদ
পার্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব শোভা ধারণ করিল । তখন
তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এ
খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে । পার্বতীর পায়েব অঙ্গুলিতে
নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন
হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আলতার র
বাহির হইতেছে । আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হ
যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে
পার্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে
সরু হইয়া আসিয়াছে । উহাতে লাবণ্যই বা কত !
কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছু
নাই । কিন্তু পার্বতীর বাহু দুটি শিরিষ কুসুম অপেক্ষাও কোম

(৩০)

পার্বতীকা শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর (হৈ) । অথবা

नका समय (है) — उसके शरीरका लावण्य मानों और भी बढ़ उठा ! सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की । उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है । पार्वतीके पैरकी उँगलीमें जो नख है वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था मानों नखसे अलंकार रस निकल रहा है । और मिट्टीमें उसको ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है । पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं । ऊपर गोल और फिर क्रमशः पतले होते आये हैं । उसमें लावण्य भी कितना (है) ! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बांहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं) ।

इकतीसवां पाठ ।

गलाय = गलेमें पेछन दिक = पीछेकी ओर
 शूलशुनि = मोतियाँ छुटिया वेड़ान = घूमते फिरते थे
 तुलना = तुलना, उपमा शण्डिते शण्डिते = घूमते घूमते
 अ = भीह अशक्त = बल, शक्ति

বাদ্ দেকর কহা—‘দেব-দেব মহাদেব তুমসে বিবাহ করে
 আর তুম স্নামীকী বড়ী হী সোহাগিনী হোআগী।’ ম
 র্শিকী বাত ভূঠী হোনীকী নহী। পর্বতরাজ ভগবান্ ম
 দেবকী জামাতারূপম্ পানেকি বিচারসে বড়ি প্রসন্ন হুএ। বি
 হকী অবস্থা হী জানিপর ভী পর্বতরাজনে পার্বতীকি বি
 হকী কোই তৈয়ারী ন কী। বে জানতে থে, (কি) মহর্ষিকী ব
 হী সচ হোগী। - ইসসে বে নিশ্চেষ্ট রহে।

বচীসবাঁ পাঠ ।

পূর্ব্ব = পহিলি

একদা = এক সময়

দূরে থাকুক = দূর রহে

বরং = বরন

বাঁপ দিয়া = কুড়কার

রাখিলেন = রাখী

রাখিলেন = লগায়া, মরা

বাঘছান = বঘছল

পরিধান = পহিরনিকা বস্ত্র

পাগল সাজিয়া = পাগল সজ

সেই অবধি = তবসে

পাদদেশ = तरাইমে

(৩২)

ভগবান্ মহাদেব পূর্ব্ব দক্ষবাজের কন্যা সতীকে
 করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করে
 তাহাতে সকলেব নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষবাজ নিজকন্যা
 এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ কবিলেন না। সতী
 নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অ
 র্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাহাব নিকটেই মহাদেবের
 আবস্থ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া

अग्निकुण्डे बाँप दिया प्राणत्याग करिलेन । সেই अवधि महादेव संसार वासना परित्याग करिया सन्यासीर मत देश विदेशे ভ্রমণ করিতে থাকেন । তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভদ্র রাখিলেন, আর বাঘচাল পরিধান করিলেন । এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন । প্রিয়তমা পত্নী সতীব বিবাহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন । অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন । সে স্থানটি অতিশয় নির্জন এবং তপস্তার পক্ষে বেশ উপযুক্ত ; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আবস্ত করিলেন । তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহাবাও সেখানে রহিয়া গেল । মহাদেব কি কঠোর তপস্তাই আবস্ত করিলেন !

(৩২)

भगवान् महादेवनि पहिले दत्तराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था । एक समय दत्तराजने एक यज्ञ आरम्भ किया । उसमें सभीका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दत्तराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया । सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुई । दत्तने सतीकी अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की । पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूदकर प्राणत्याग किया । तबसे महादेव संसारवासना छोड़

कर संन्यासीके समान देशविदेशमें घूमा करते थे । उन्हें साथमें जटा रखी, शरीरमें भस्म लगाया और बाघछल पहन लिया । इसी तरह पागल सजकर वे नानास्थानमें लगे । प्रियतमा पत्नी सतीके विरहमें वे बड़े ही कातर पड़े । अन्तमें बहुतसे स्थानोंमें घूमकर, वे हिमालय तराईमें आ पहुँचे । वह स्थान बड़ा ही निर्जन और तस्याके लिये अच्छा उपयुक्त (था) ; वहाँ एक कुटी बाँध (बनाकर) उन्होंने उपासना आरम्भ की । उनके साथ तसे अनुचर आये थे, वे भी वहाँ रह गये । महादेवने कै कठोर तपस्या आरम्भ की !

तेतीसवाँ पाठ ।

आগুণের = अग्निका

তাপেই = गर्मिसे ही

জালিলেন = जलाया

পুড়িয়া যাইত = जल जाता

জলন্ত = जलती हुई

আনিয়া দিত = ला देती थी

হুতাশন = अग्नि

(३३)

थोना जायगाय बसिया, सामने एक आगुणेर कु जालिलेन । उपरें प्रेचणु सूर्या, चतुर्दिक्के जलन्त हुताशन अग्निलोक हईले आगुणेर तापेई पुड़िया यईत ! एरूप कठे अवस्थाय तनि ध्यान आरन्त करिलेन ।

महादेव निजेई भगवान । ताँहार ध्यान कबिया कत लो कृतार्थ हईया यईतेछे । महादेव अयं मग्नलमय, तनि सके

মঙ্গল বিধান করেন । তিনি যে কি জন্তু খান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না । দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি ? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম । এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্য কলাপের কারণ নির্দেশ করা যায় না ।

পর্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না । তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন । বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্বতী ও তাহার জয়া-বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন “তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব-দেব পশুপতির সেবা কর ।” পরদিন হইতে পার্বতী পশুপতির সেবায় নিরত হইল । পার্বতী স্ত্রীলোক, যুবতী, এমনত অবস্থায় তপস্ত্রাস্থলে গমন কবিলে তপস্ত্রার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্বতীকে নিষেধ করিলেন না । কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন । মহাপুরুষগণের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে । যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রক্ষেপও করেন না । মহাপুরুষ-প্রকৃতির লক্ষণই এই । পার্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্ত ফুল স্নানের জন্ত জল আনিয়া দিত, বস্ত্রের স্থান পরিষ্কার কবিয়া রাখিত ।

(২২)

खुली जगहमें बैठकर, सामने एक अग्निका कुण्ड

जलाया । जपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आ दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता ! ऐ कठोर अवस्थामें उन्होंने ध्यान आरम्भ किया ।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), उनका ध्यान करके कि ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं । महादेव स्वयं मङ्गलमय (वे सभीका मङ्गल विधान करते हैं) । वे किस लिये ध्य करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते । देवता जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं) मनुष्यकी ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है) । इसी ज्ञान द्वारा ई रके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता ।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि भगव महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आ न्दकी और सीमा न रही । उन्होंने पशुपतिके पास जा विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की । मकानपर लौट उन्होंने पार्वती और उसकी जया-विजया नामकी दोनों स योंसे कहा “तुम सब रोज़ जाकर देव-देव पशुपतिकी करो ।” दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लग पार्वती स्त्री (है), युवति (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्था जानसे तपस्यामें विघ्न हो सकता, यह समझकर भी म देवने पार्वतीको मना नहीं किया ; कारण महादेव जितेन्द्रिय पुरुष थे । महापुरुषगणका चित्त साधारण ष्योंकी भाँति चंचल नहीं (है) । जिन सब कार

সাধারণ মনুষ্য চঞ্চল হই উঠতে হই, মহাপুরুষগণে তখনপরে ভ্রূক্ষেপ
 भी नहीं करते । महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है । पार्वती
 प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल
 ला देती और यज्ञका स्थान साफ कर रखती (थी) ।

চৌতীসवां पाठ ।

পাত্রী = স্ত্রী

আনয়ন করা = লানা

অনুসন্ধান = খোজ

সুতরাং = इसलिए

কোথাও = कहीं भी

মিলিয়া = मिलकर

প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন

ঠিক = ठीक

= प्रलय मचा सकती हैं

পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর ইহাতেই দেবগণ মহাদেবের জন্ম
 একটি উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন । সতী যেসকল
 গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটি কন্যা পাইবার
 জন্ম দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ-বিদেশ
 ঘূর্ণিতেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া
 যাইতেছে না । মহাদেব তাই জীবিয়োগেব পর ইহাতে
 সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন । তাঁহাকে
 আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য
 হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সেই কথা বলিতে
 পারেন না । তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে
 প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন । সুতরাং তাঁহারা সকলে

मिलिया ठिक करिलेन ये, एकटी सुन्दरी कन्या सहित महादेव विवाह संघटित हईले, पशुपति निजेई सम्यास त्याग करि पुनवार गृहस्थ हईबेन । এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আঁ সিংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাঁ ও গিয়াছে । পর্বতবাজ হিমালয়ের কন্যা পার্বতীর ন্যায় গুণব ও রূপবতী রমণী স্বর্গে, মর্ত্তে, কোথাও আর নাই । ৩ ইহাব সহিতই মহাদেবেব বিবাহ দিতে হইবে । মহর্ষিব শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন । কিন্তু তাঁ মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করি সম্মত হইলেন না ।

(২৪)

सतीके देहत्यागके बादसे ही देवगण महादेवके लिये उपयुक्त पात्रीकी खोज करते हैं । सती जैसी गुणवती और वती थीं, ठीक इसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देव गण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घू हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती । महादेव तो स्त्रीवियोगके बादसे संसारवासनाको त्याग क संन्यासी बने हैं । उनको फिर गार्हस्थ्यधर्ममें लाना देव आँका प्रधान उद्देश्य होनिपर भी वे साहस करके महादे पास यह बात कह नहीं सकते । वे जानते हैं कि महा क्रुड होनिपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं । इस उन सभीने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी क

साथ महादेवका विवाह होजानेसे पशुपति स्वयं ही संन्यास छोड़कर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद मुनिने आकर समाचार दिया कि शिवकी उपयुक्त पात्नी इतने दिनोंमें पाई गई है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या पार्वतीकी भाँति गुणवती और रूपवती रमणी स्वर्गमें, मर्त्तमें कहीं भी और नहीं है। इसलिये इसके साथ ही महादेवका विवाह करना होगा। महर्षि की बात सुनकर देवगण खूब आनन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके पास विवाहका प्रस्ताव करनेमें सम्मत न हुए।



नोट—“पार्वती” नामकी बड़ी ही मनोहारिणी पुस्तिका भी छपकर तय्यार हो गई है। मूल्य ५॥